जनवरी 2002
Rs. 10/-
चन्दामामा
नव वर्ष की शुभ कामनाएँ

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०६ जनवरी - २००२ सञ्चिका - १

भारत की गाथा ४७

अनोखा मौन १९

यक्ष पर्वत ११

चमत्कारी वीणा ५१

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

अधिकार से पूर्व कर्त्तव्य

वर्ष २००२ की दहलीज़ पर खड़े अनायास ही पचास साल पूर्व की स्मृति ताजा हो जाती है, जब हमें पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में प्रथम लोकतांत्रिक सरकार मिली थी। यह हमारे अपने संविधान के बन जाने के दो वर्ष पश्चात संभव हुआ। जनवरी २६, १९५० को भारतवर्ष सर्वसत्ता सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणतंत्र घोषित किया गया। देश में अक्तूबर १९५१ और फरवरी १९५२ के मध्य प्रथम आम चुनाव का आयोजन किया गया।

प्रत्येक नागरिक के लिए संविधान का आदेश है कि वह देश की प्रभुसत्ता, एकता और अखंडता की मर्यादा रखे और उसकी रक्षा करे। अपनी मातृभूमि के प्रति सभी नागरिकों का यह वैसा ही कर्त्तव्य है, जैसा कि उनका माता-पिता तथा समकक्षों के प्रति होता है।

संविधान नागरिकों को अनेक आधारभूत अधिकार देता है, जैसे-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, अपनी पसन्द का धर्म स्वीकार करने की स्वतंत्रता तथा कोई भी व्यवसाय या व्यापार करने की स्वतंत्रता। हमारे संविधान की एक निराली विशेषता यह है कि इन अधिकारों के साथ यह इनके अनुरूप नागरिकों के कर्त्तव्यों का वर्णन करता है। महात्मा गाँधी ने कहा था, हमें अपने अधिकारों का लाभ उठाने से पहले अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए।

हमारा देश अभी सभी दिशाओं से भिन्न-भिन्न प्रकार के दबावों का सामना कर रहा है। इसलिए केवल यही समुचित होगा कि हममें से प्रत्येक नये वर्ष के संकल्प के रूप में मातृभूमि की निःस्वार्थ सेवा करने तथा अपने देश की एकता और अखंडता को मजबूत बनाने की प्रतिज्ञा करे।

सम्पादक : *विश्वम*

'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक - ४

आधुनिक भारत के भी अपने नायक हैं - क्रिया-कलाप के अनेक क्षेत्रों में। अपने आधुनिक नायकों पर यहाँ एक प्रश्नोत्तरी दी जा रही है।

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

1. वह साहित्य में नोबेल पुरस्कार जीतनेवाला एशिया में पहला व्यक्ति था। उसके गीतों ने बहुतों को भारत की आजादी के लिए लड़ने की प्रेरणा दी। क्या जानते हो, वह कौन है? --

2. जब तुम पोखरान में भारत के परमाणु परीक्षण के बारे में सोचते हो तो सबसे पहले तुम्हारे मन में किसका नाम आता है?

   ----

3. हम लोग प्रतिवर्ष २८ फरवरी को एक नोबेल पुरस्कार विजेता के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाते हैं। उसने १९२८ में भौतिक शास्त्र पुरस्कार जीता। क्या उसके नाम का अनुमान लगा सकते हो?

   ----

4. एक सितार वादक को इंग्लैण्ड की महारानी के द्वारा सम्मानार्थ नाइट (सामन्त) की उपाधि प्रदान की गई है। क्या उसे जानते हो?

   ----

5. वह लाखों के दिल की धड़कन है। इसके नाम पर कोलकाता में एक मन्दिर है। यह अब बहुत लोकप्रिय टी.वी. गेम शो का मेज़बान है। कौन है यह?

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें -

मेरा प्रिय आधुनिक नायक .... है,
क्योंकि ....
प्रतियोगी का नाम: ....
उम्र: .... कक्षा: ....
पूरा पता: ....
....
पिन: .... फोन: ....
प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....
अभिभावक के हस्ताक्षर: ....

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ फरवरी से पूर्व भेज दें-
हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-३
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुईं तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

वीरबाहु का संन्यास व्रत

जोगपुर में वीरबाहु नामक एक गरीब व्यक्ति रहता था। उसके परिवार के सदस्य थे, उसकी पत्नी, दो बच्चे और बूढ़ी माँ। वह कड़ी मेहनत करता था, पर इससे परिवार की ज़रूरतें पूरी नहीं हो पाती थीं। पेट भर खाना और खिलाना भी उससे नहीं हो पाता था। इसलिए उसने संन्यास लेने का निर्णय ले लिया और जंगल में स्थित संन्यासियों के एक मठ की तरफ़ निकल पड़ा।

दुखी वीरबाहु सिर झुकाये जंगल के रास्ते पर चला जा रहा था। बीच रास्ते में धन से भरी एक थैली उसे दिखायी पड़ी। उसने थैली ले ली और अत्यंत उत्साह के साथ अपने आप कहने लगा, ''लगता है, मेरा संन्यास लेना बनदेवी को पसंद नहीं। इसीलिए उसने मुझ पर दया दिखायी और बीच रास्ते में मेरे लिए यह थैली रख दी। अब घर लौटूँगा और आराम से जिंदगी काटूँगा।'' यों कहते हुए वह वापस घर की ओर मुड़ा।

दूसरे ही क्षण कोई चिल्ला पडा, ''ठहर जाओ''।

वीरबाहु ने डरते हुए मुड़कर देखा। हट्टे-कट्टे दो चोर वहाँ खड़े थे। उनके हाथों में चमकती पैनी तलवारें थीं। उन्हें देखकर वह भयभीत हो गया। उन चोरों ने पास ही के गाँव में चोरी की थी। धन से भरी थैलियों में से एक थैली रास्ते में गिर गयी थी। जब उन्हें इसका पता चला तो थैली को ढूंढते हुए वे वापस लौटे और उन्होंने उस थैली को वीरबाहु के हाथों में देखा।

दोनों चोर वीरबाहु के पास आये और डाँटते हुए कहा, ''चुपचाप वह थैली हमें दे दो। हमने इस धन की चोरी करने के लिए अपनी सारी अक़्ल लड़ायी, बड़ा साहस किया और तुम इसे हड़प लेना चाहते हो?''

वीरबाहु ने डर के मारे थरथर काँपते हुए वह थैली चोरों को दे दी और कहा, ''देखो भाइयो, मैं जानता नहीं था कि यह तुम्हारी जायदाद है। मैंने जिन्दगी में अनगिनत तक़लीफें सहीं। कड़ी मेहनत की। किन्तु परिवार को संभालना मुझसे नहीं हो पा रहा था। इसलिए संन्यास लेने मठ की ओर निकल पड़ा

- रमणी -

और तभी रास्ते में पड़ी यह थैली मुझे मिल गयी। मैंने सोचा कि मेरे कष्टों को दूर करने के लिए वनदेवी ने मुझे यह थैली भेंट स्वरूप दी है।''

उसकी बातों पर चोर ठठाकर हँस पड़े और बोले, ''क्या कहीं तुम्हारी ग़रीबी को दूर करने के लिए वनदेवी भेंट देगी? ऐसी व्यर्थ आशा मत रखो। अपने दिमाग़ से ऐसे खोखले विचार निकाल फेंको। देखो, दायीं ओर मुड़ोगे तो वहाँ संन्यासियों का मठ दिखायी देगा। वे भिक्षा मांगने अब तक निकल चुके होंगे।'' कहकर चोर वहाँ से चले गये।

चोरों की बातें सुनते ही वीरबाहु के मन में संन्यासियों के प्रति घृणा पैदा हो गयी। वह सोचने लगा, ''मुझे खेती करना मालूम है, हल चलाना जानता हूँ, मेहनत करने की मुझमें ताक़त है, तो फिर क्यों संन्यासियों की तरह भीख मांगू। और वह भी सिर्फ अपना पेट भरने के लिए? छीः ! ये संन्यासी भी कैसे लोग हैं, जो केवल अपना पेट भरने के लिए कोई काम किये बिना भीख मांगते-फिरते हैं! यह तो जिम्मेदारी से भागना हुआ। अव्वल दर्जे के सुस्त हैं ये संन्यासी।'' फिर वह तुरंत घर की ओर चल पड़ा।

वीरबाहु की माँ ने जब देखा कि बेटा बहुत परेशान है तो उसने पूछा, ''अरे वीर, क्या बात है? इतना परेशान क्यों हो? क्या सोच रहे हो?''

वीरबाहु ने, जो हुआ, बिना छिपाये सब कुछ बता दिया। माँ उसे ढाढ़स बंधाती हुई बोली, ''अच्छा हुआ, अंतिम समय में भगवान ने तुम्हारी बुद्धि ठिकाने लगा दी। ग़लत रास्ते पर जाने से बचा लिया। जानते हो, वे संन्यासी कैसे जीते हैं? हम जैसे गृहस्थियों की दया पर जीवित हैं वे। हम निर्मल मन से जो देते हैं, उससे वे जिन्दा रहते हैं। अपने पर नहीं बल्कि दूसरों पर निर्भर रहते हैं ये संन्यासी। याद रखो, देनेवाला सदा लेनेवाले से बड़ा होता है। समाज में उसी की इज्ज़त होती है। आगे कभी भी ऐसे विचार अपने दिमाग में मत आने देना। समझे?''

''क्या इतनी छोटी बात से भी मैं नावाक़िफ हूँ?'' चिढ़ता हुआ वीरबाहु बोला। तब उसकी माँ ने कहा, ''जानते हुए भी संन्यासी बनने क्यों निकल पड़े? यह भी कोई बुद्धिमानी का काम हुआ? चार-पाँच साल और मेहनत करो। तब तक तुम्हारे दोनों बेटे बड़े हो जायेंगे। काम-काज में वे तुम्हारी मदद करने लगेंगे। तब सबकी जिंदगी आराम से कटेगी।''

प्राण भय

एक जंगल में एक खरगोश रहा करता था। एक बार उसका पैर फिसल गया और एक गड्ढे में गिर गया। उस गड्ढे में पानी इतना गहरा नहीं था कि वह डूब जाए। खरगोश ने पानी से बाहर आने का भरसक प्रयत्न किया। पर वह किनारे नहीं आ पाया।

वह मन ही मन इस बात पर दुखी हो रहा था कि बाहर जाने का कोई रास्ता नहीं है और मेरा यहीं मर जाना निश्चित है। जब वह इस चिंता में ग्रस्त था, तब दो खरगोश और एक बंदर उधर से गुजर रहे थे और उन्होंने खरगोश को उस बुरी हालत में देख लिया। उन तीनों ने मिलकर उसे बाहर निकालने की भरसक कोशिश की। पर वे अपने प्रयत्न में असफल हुए। गड्ढे में फंसे खरगोश ने उनसे कहा, ''तुम्हारी कोशिश कामयाब नहीं होगी। तुम तीनों यहाँ से चले जाओ।''

दोनों खरगोशों व बंदर को उसकी दुःस्थिति पर दुख हुआ। पर बेचारे वे कर भी क्या सकते थे! वे वहाँ से चलते बने।

थोड़ी देर बाद एक सियार चिल्लाता हुआ गड्ढे की ओर चला आ रहा था। सियार की चिल्लाहट सुनते ही खरगोश डर के मारे थरथर काँपने लगा। उसे लग रहा था कि अब बचना असंभव है। भय के मारे उसने छलांग मारी। बस क्या था, गड्ढे से बाहर आ गया और देखते-देखते आँखों से ओझल हो गया।

जब खरगोश भागा-भागा जाने लगा, तब रास्ते में वे दोनों खरगोश व बंदर सामने से आ रहे थे। खरगोश को देखकर वे चकित रह गये। उन्होंने आश्चर्य-भरे स्वर में पूछा, ''हमारी कोशिशों के बावजूद तुम बाहर नहीं आ पाये। अब तुम कैसे स्वयं बाहर आ सके?'' खरगोश ने कहा, ''मैंने देखा कि सियार चिल्लाता हुआ मेरी ही तरफ़ बढ़ा चला आ रहा है तो मैंने पूरा ज़ोर लगाकर छलांग मारी और बाहर आ गया।''

उसकी बातें सुनकर दोनों खरगोश और बंदर हँस पड़े।

- जमुना रानी.

आपके लिए प्रश्नोत्तरी

कटक
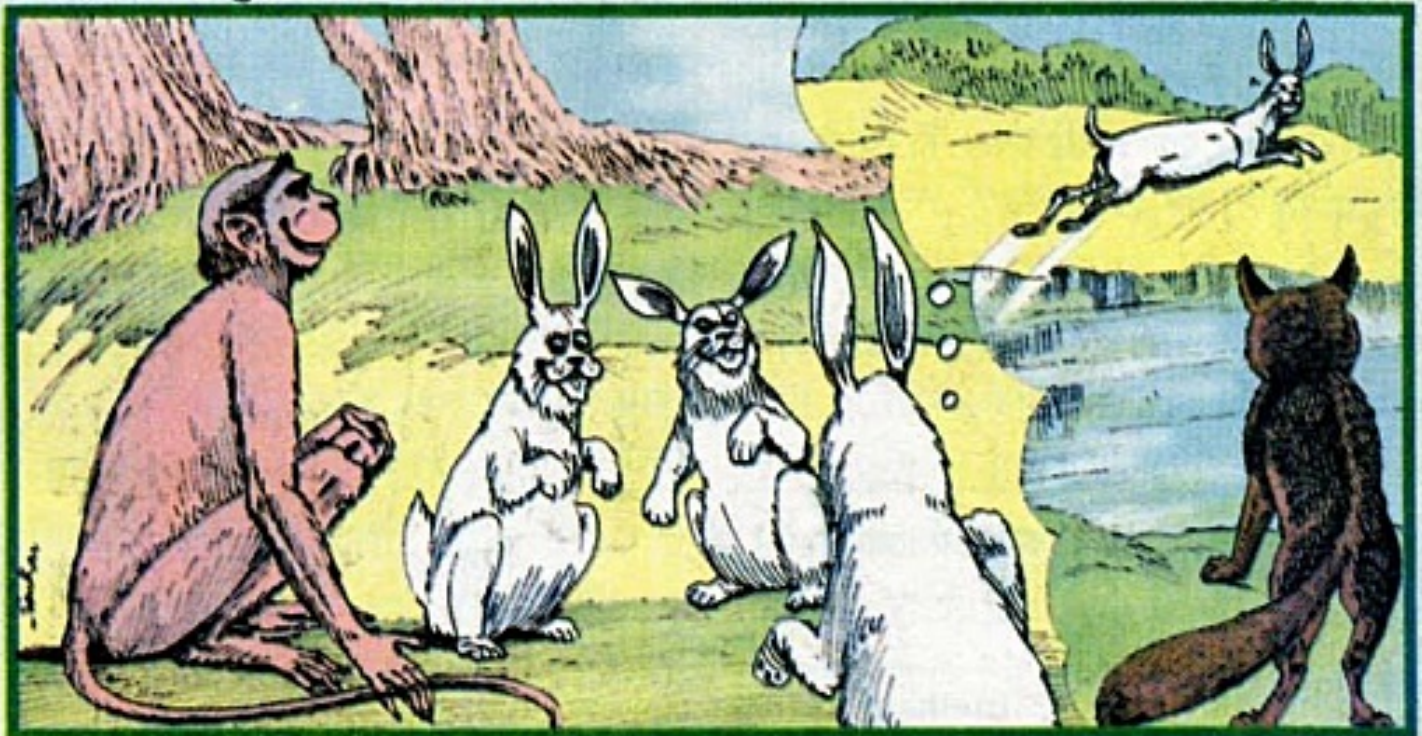
हजार साल पुराने शहर से गुजरना उत्तेजनाप्रद लगता है। है न? उड़ीसा में कटक का पर्यटन, जिसने अपने अस्तित्व की सहस्राब्दी मना ली है, सब की रुचियों को सन्तुष्ट करेगा - चाहे वे उत्कंठित पर्यटक हों या क्रेता, या वनविहारी, प्रकृति प्रेमी या अन्य शेष।

कटक को कटका कहा जाता था जो उड़ीसा का सबसे प्रमुख नगर था। अनेक राजवंशों द्वारा शासित इस नगर ने बहुत उतार-चढ़ाव देखे हैं। गंगा राजवंश द्वारा निर्मित बाराबती किला के भग्नावशेष आज भी इतिहासकारों का मन मोह लेते हैं।

क्या आप तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं? तब यह नगर देखने योग्य है जहाँ अनेकानेक देवी-देवताओं के मन्दिर और पूजास्थल हैं। क़ादिमि रसूल हिन्दू और मुसलमान दोनों के लिए पवित्र स्थल है। विश्वास किया जाता है कि इसमें स्थित गोल पत्थर पर पैगम्बर मुहम्मद के पदचिह्न हैं।

अनसूपा झील में प्राकृतिक सौन्दर्य के अनेक क्षितिजों के दर्शन कर सकते हैं। शरद काल में यहाँ प्रवासी पक्षियों की अनेकानेक जातियाँ भ्रमण करने आती हैं।

लम्बी दूरी के पैदल यात्री और पर्वतारोही! अशोका झाड़ का जोखिम भरा आरोहण कभी हाथ से जाने न दो। महानदी का द्वीप धवलेश्वर एक दिवसीय आमोद-प्रमोद के लिए मनोहर स्थल है।

कटक अपने ज़रदोजी कर्म, चाँदी के बर्तन, सींग और पीतल के काम तथा रेशमी व सूती वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध है।

आपके लिए प्रश्नोत्तरी !

१४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए।

प्रतियोगिता - V

१. पूरी में रघुराजपुर एक अनोखे प्रकार की चित्रकला के लिए प्रसिद्ध है। वह क्या है?

----

२. उड़ीसा का कौन-सा शहर इस्पात के कारखाने के लिए प्रसिद्ध है?

----

३. उड़ीसा में उषाकोठी वन्य जीवन अभयारण्य कहाँ है?

अपने उत्तर स्पष्ट अक्षरों में रिक्त स्थानों में लिखें, और नीचे लिखे कूपन को भरकर निम्न लिखित पते पर भेज दें :

Orissa Tourism Quiz Contest
Chandamama India Limited
No.82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097

नाम : ....

आयु : ....

पता : ....

....

पिन.................. फोन ....

Winners picked by Orissa Tourism in each contest will be eligible for **3 days, 2-night** stay at any of the **OTDC Panthanivas**, upto a maximum of four members of a family. Only original forms will be entertained. The competition is not open to CIL and Orissa Tourism family members. Orissa Tourism, Paryatan Bhaven, Bhubaneswar-751 014. Ph: (0674)432177, Fax:(0674)430887, e-mail:ortour@sancharnet.in. Website:Orissa-tourism.com

13

खड़ग, जीवदत्त एंव मणिभूषण जहाँ ठहरे हुए थे, वहाँ एक राक्षसी आयी। उसके पति के द्वारा जीवदत्त ने यक्षपर्वत से संबंधित चंद रहस्य जाने। आधी रात को मणिभूषण किसी आहट के कारण जाग उठा और भयभीत होकर चिल्लाने लगा। इसके बाद :

मणिभूषण की चिल्लाहट से जीवदत्त की नींद में खलल पहुँची और वह जाग गया। जीवदत्त ने मणिभूषण को धैर्य दिलाते हुए कहा, ''मणिभूषण, चुप हो जाओ। डरने की कोई बात नहीं। जो दो राक्षसियाँ आयी थीं, उन्हें मालूम है कि तुम यक्ष मणिरंजित नहीं हो।

उन्हें यह भी मालूम है कि तुम उसके सेवक हो, क्योंकि मैंने उन्हें बता दिया कि तुम मणिभूषण हो। उन्होंने मेरी बात का विश्वास किया और वे चली गयीं।''

इसके बाद मणिभूषण ने सोने की बहुत कोशिश की, पर उसे नींद नहीं आयी। वह जागा ही रहा। सबेरा होते ही खड़ग और जीवदत्त जाग उठे। फिर वे सब मिलकर नाव के पास गये और उसमें बैठ गये। मणिभूषण धीरे-धीरे नाव चलाने लगा।

आधे घंटे के बाद नाव किनारे रोक दी गयी। उतरते हुए मणिभूषण ने उन दोनों से कहा, ''यही यक्षपर्वत है। अब आप लोग उतर सकते हैं। मेरा मालिक मणिरंजित आप दोनों से मिलने स्वयं आया हुआ है।''

खड़ग और जीवदत्त उतरे और पर्वत की ओर देखा। वहाँ की एक ऊँची चट्टान पर एक युवक खड़ा हुआ था। उसके हाथ में एक छोटी गदा

थी। वह युवक पलक मारे बिना खड़ग और जीवदत्त की ओर एकटक देख रहा था।

तीनों उस युवक के निकट पहुँचे। खड़ग और जीवदत्त को तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए उस युवक ने कहा, "खड़ग और जीवदत्त, तुम दोनों के दुस्साहस को देखते हुए मुझे आश्चर्य हो रहा है। कहते हैं, *बुद्धि! कर्मानु सारिणी।* तुम बेचारों को देखकर मुझे दया आती है।"

जीवदत्त ने मणिरंजित को नख से शिख तक गौर से देखा और कहा, "मणिरंजित, पद्मावती की राय है कि यहाँ के पथ्थर के रथ को उसकी जगह से जो सरका सकेगा, वही महावीर है। और तुम्हारी योजना इस काम पर आनेवाले का वध करना है। वही योजना अब तुम्हारी फाँसी का फंदा बननेवाला है। कहाँ हैं, वे राजकुमारियाँ पद्मावती और बसंतकुमारी?"

उसकी बातें सुनते ही मणिरंजित क्रोधित हो उठा। वह गदा उठाने ही वाला था कि खड़गवर्मा ने तलवार की मूँठ पर हाथ रखते हुए कहा, "मणिरंजित, गदा तब उठाना, जब हम पत्थर के उस रथ को उसकी जगह से हिला नहीं पायेंगे। अगर हम इस काम में असफल हो जाएँगे तब हो सकता है, पद्मावती तुम्हें महावीर समझकर तुमसे विवाह करे। पहले हमें वह रथ दिखा दो।"

मणिरंजित कुछ कहने ही वाला था, इतने में मणिभूषण ने उससे कहा, "जल्दबाजी मत करो मणिरंजित। इन दोनों युवकों को पहले रथ के पास ले जाओ।" मणिरंजित ने अपने को संभाला और तीनों को अपने साथ लेकर गया।

थोड़ी ही देर में वे एक समतल प्रदेश में पहुँचे। उसके नीचे का पूरा भाग फल व फूलों से लदे वृक्षों से भरा हुआ था। वहाँ के उद्यानवन के बीचों बीच एक-दूसरे से थोड़ा हटकर रथ के आकार में दो भवन थे। उनमें से एक भवन के ऊपर दो युवतियाँ खड़ी थीं और वहाँ से वे खड़ग और जीवदत्त को देख रही थीं। उन दोनों को देखकर उनके चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ आयी।

जीवदत्त ने उन दोनों युवतियों को देखकर कहा, "मणिरंजित, वे ही बसंतकुमारी और पद्मावती हैं न?"

"हाँ, तुम दोनों के पराक्रम को देखने के लिए

वे आतुर हैं, इसीलिए यहाँ खड़ी हैं।'' यह कहते हुए वह मुड़ा और पत्थर के रथ को दिखाते हुए कहा, ''वह जो तुम देख रहे हो वही पत्थर का रथ है''। दांत पीसते हुए उसने कहा।

उन दोनों ने देखा कि वह बीस फुट की ऊँचाई का रथ है। उससे सटकर ही पर्वत था। जब वे दोनों रथ की ओर बढ़ने लगे तो मणिरंजित मणिभूषण को बुलाने के लिए मुड़ा। पर मणिभूषण इर्द-गिर्द कहीं नहीं था।

कुछ कहे बिना मणिभूषण के वहाँ से चले जाने पर उसे आश्चर्य हुआ। फिर मणिरंजित रथ के पास गया। तब तक खड़ग और जीवदत्त ने रथ के चारों ओर घूमकर उसे भली-भांति देख लिया।

जीवदत्त ने झुककर रथ के निचले भाग को दिखाते हुए खड़गवर्मा से कहा, ''खड़ग, यह रथ पर्वत से जुड़ा हुआ नहीं है। यहाँ पड़े पत्थर से इस रथ का निर्माण हुआ है। नीचे से पतला प्रकाश आ रहा है और अस्पष्ट ध्वनियाँ भी आ रही हैं। लगता है, कुछ मनुष्य आपस में बातें कर रहे हैं।''

जीवदत्त की बातें सुनते ही मणिरंजित उछल पड़ा, मानों साँप ने उसे डँस लिया हो। उसके मुँह से अनायास निकल पड़ा, ''रथ के नीचे से क्या तुम्हें प्रकाश दिखायी दे रहा है और आदमियों की आवाजें सुनायी पड़ रही हैं?'' असंभव! यह बिलकुल असंभव है।

''असंभव कैसे हो सकता है? पहाड़ में जो
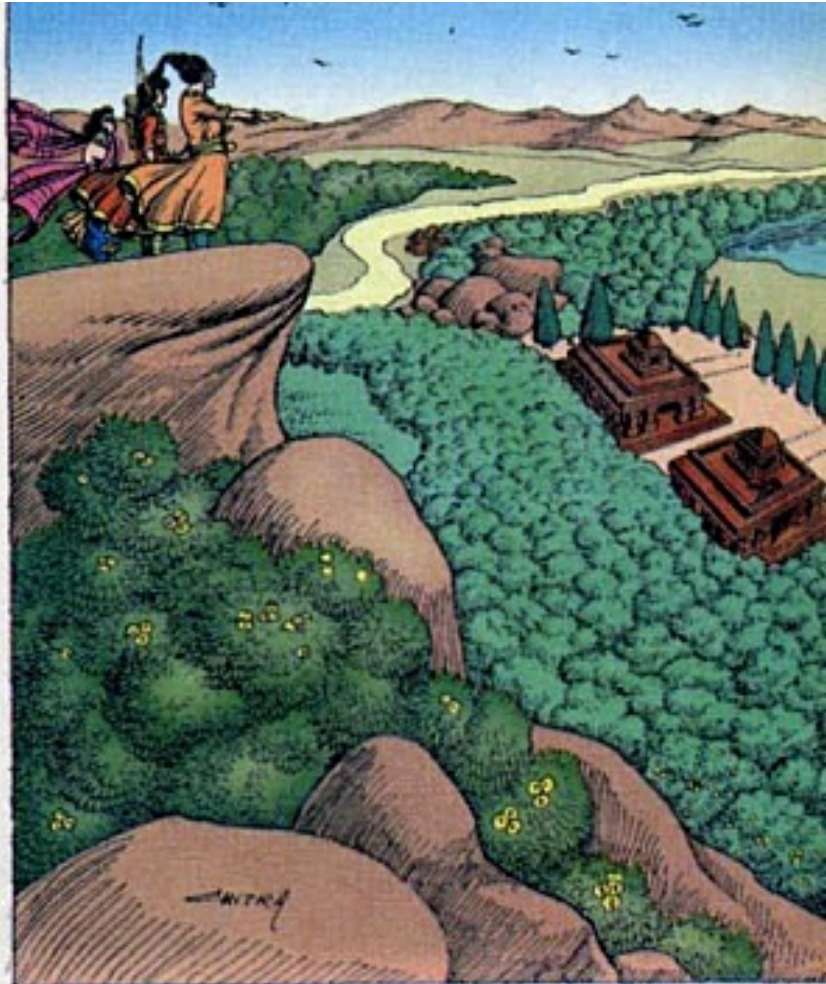
हीरे-जवाहरात हैं, उसे खोदकर बाहर निकालनेवाले तुम्हारे सभी गुलाम गूँगे नहीं हो सकते?'' जीवदत्त ने कटु स्वर में कहा।

मणिभूषण एक क्षण के लिए निश्चेष्ट हो गया। फिर अपने को संभालते हुए उसने पूछा, ''तुम्हें इस रहस्य का पता कैसे लग गया? यह रहस्य तुमसे किसने बताया? अब जान गया, मणिभूषण ने ही यह रहस्य तुम्हें बताया होगा।''

''बेचारे मणिभूषण पर शक मत करो। हमारी समझ में अब तक नहीं आया और उसकी बातों से हम अब तक जान नहीं पाये कि वह तुम्हारा सेवक है या दोस्त। मैंने अपनी दिव्य दृष्टि से यक्ष पर्वत से संबंधित सारे रहस्य जान लिये।'' जीवदत्त ने हँसते हुए कहा।

मणिरंजित का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। उसने कहा, "जीवदत्त बातें मत बनाओ। डींगे मत हांको। रथ को सरकाने के प्रयत्न में लग जाओ। देखना, यह काम तुमसे हो पायेगा या नहीं। तुम्हारे शक्ति-सामर्थ्य को देखने के लिए पद्मावती और वसंतकुमारी अपलक उस भवन पर खड़ी हैं।"

जीवदत्त ने खड्गवर्मा को इशारा किया और रथ के आकार में बने दोनों भवनों को दिखाते हुए मणिरंजित से पूछा, "जिस भवन के ऊपर दोनों राजकुमारियाँ खड़ी हैं, उसके बगल का भवन तुम्हारा ही निवास-गृह है न?"

"हाँ, तुमने यह सवाल क्यों किया?" मणिरंजित ने पूछा।

"वह भवन कुछ ही क्षणों में टूटकर धराशायी होनेवाला है। यह देखो!" यह कहते हुए जीवदत्त ने मंत्रोचारण किया और अपना दंड पत्थर के रथ पर रख दिया। फिर अपने पैर से लात मारी।

बस देखते-देखते रथ अपनी जगह से हिला। बड़े ही वेग से वह नीचे की ओर लुढकने लगा और मणिरंजित के भवन से टकरा गया। उस भवन और पत्थर के रथ के टुकडे-टुकडे हो गये। उनके कुछ टुकड़े उड़े और उद्यानवन में जा गिरे।

अपनी ही आँखों के सामने होते हुए सर्वनाश के इस दृश्य को देखकर मणिरंजित का शरीर कांप उठा। वह अवाक् रह गया। उसने सपने में भी सोचा नहीं था कि ऐसा भी हो सकता है। अपने को संभालते हुए जीवदत्त पर प्रहार करने

के लिए उसने गदा उठायी। किन्तु इतने में खड़गवर्मा ने तलवार निकाली और उसका सामना किया।

जीवदत्त खुशी से पागल हो उठा। उसने गंधर्व वसुमति का दिया कांस का नगाड़ा हाथ में लिया और ज़ोर से बजाने लगा। दूसरे ही क्षण पत्थर के रथ के हट जाने से एक बिल प्रकट हुआ, जिसमें से कुछ राक्षस व गंधर्व ऊपर आये। वे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे।

जीवदत्त ने उन सबको चुप रहने के लिए कहा और बताया, ''इस क्षण से तुम सब लोग स्वतंत्र हो। तुम अपने-अपने घर लौट सकते हो''। फिर उसने कांसे का नगाड़ा ऊपर उठाया और कहा, '' कांसे के इस नग़ाड़े को बसुमति नामक एक गंधर्व ने मुझे भेंट में दिया। तुममें से कोई गंधर्व हो तो आगे बढ़ो और इसे ले लो।''

उनमें से एक गंधर्व आगे आया। जीवदत्त के दिये नगाड़े को लिया और उसे चूमा। विमुक्त गंधर्वों और राक्षसों से जीवदत्त कुछ कहने ही वाला था कि इतने में मणिरंजित का हाहाकार सुनायी पड़ा। जीवदत्त ने मुडकर देखा। खड़गवर्मा ने मणिरंजित को घायल कर दिया था और नीचे गिरे मणिरंजित के गले पर अपनी तलवार रखे वह शान से खड़ा था।

इस दृश्य को देखकर जीवदत्त ज़ोर से हँस पड़ा। तब खड़गवर्मा ने जीवदत्त से कहा, ''जीवा, इस दुष्ट मणिरंजित को मौत के घाट

उतार दूँ या छोड़ दूँ? इस पापी ने राजकुमारियों का अपहरण करके केवल उन्हीं को दुख नहीं पहुँचाया, बल्कि उनके माता-पिताओं को भी मानसिक क्षोभ पहुँचाया है।''

राजकुमारी पद्मावती व बसंतकुमारी वहाँ आयीं। बसंतकुमारी ने मणिरंजित को देखते हुए कहा, ''मैंने प्रतिज्ञा की थी कि जो वीर इस नीच को मार डालेगा, उसी से मैं विवाह करूँगी। अगर इसकी मौत अपनी आंखों नहीं देखूँगी तो मैं जीवन भर ब्रह्मचारिणी ही बनकर रह जाऊँगी।''

खड़गवर्मा ने बसंतकुमारी को ध्यान से देखा। उसके अद्‌भुत सौंदर्य पर वह मुग्ध हो गया। उसकी बातों से स्पष्ट हो गया कि उसे मार डालने

खड्‌गवर्मा पेशोपेश में पड़ गया। वह निर्णय नहीं कर पाया कि मणिरंजित को मारूँ या छोड़ दूँ। तब जीवदत्त ने कहा, ''खड्‌ग, यक्ष राजा की बात तुमने सुनी है न? मणिरंजित को माफ़ कर दो और उसे छोड़ दो।''

''तो फिर वीरपुर की राजकुमारी की प्रतिज्ञा का क्या होगा?'' खड़्‌गवर्मा ने राजकुमारी को देखते हुए पूछा।

वसंतकुमारी लज्जा से गड़ गयी और पद्मावती के पीछे छिप गयी। यक्षराजा ने मुस्कुराते हुए कहा, ''मैं पहले भी कह चुका हूँ कि मणिरंजित ज़ीवित होते हुए भी मृत समान है, इसलिए वसंतकुमारी की प्रतिज्ञा में भंग नहीं पड़ेगा। वह व्यर्थ मानी नहीं जायेगी। वह उस दोष से मुक्त ही समझी जायेगी। मैं अभी स्वयं पत्थर के रथ को सरकानेवाले जीवदत्त का विवाह पद्मावती से और खड़्‌गवर्मा का विवाह वसंतकुमारी से कराऊँगा। ले आओ पुष्प मालाएँ।''

मणिभूषण विमान से चार पुष्प मालाएँ ले आया। चारों को एक-एक माला दी। पद्मावती और जीवदत्त ने एक दूसरे के गले में माला पहनायी। खड़्‌गवर्मा और वसंतकुमारी ने भी ऐसा ही किया। हर्षध्वनियों से वह प्रदेश गूँज उठा।

मणिरंजित के यहाँ अब तक जो गंधर्व और राक्षस गुलाम थे, वे एक-एक कर आगे आये और खड़्‌ग व जीवदत्त के पैरों को छूकर प्रणाम किया।

जीवदत्त ताड़ गया कि वे कुछ कहना भी

पर ही वसंतकुमारी उसकी पत्नी बन सकती है। उसने कुछ और न सोचे-बिचारे तलवार उठायी और उसे उसके गले में घुसेड़ने ही वाला था कि इतने में आवाज आयी, ''ठहर जाओ''। सबने सिर उठाकर ऊपर देखा।

हंस के आकार का एक वायुयान उनके सामने आकर उतरा। उसमें से यक्ष राजा और मणिभूषण उतरे।

यक्षराजा ने सबको देखने के बाद कहा, ''खड़्‌ग और जीवदत्त, निस्संदेह तुम असमान वीर हो। मणिभूषण ने पूरा विवरण मुझे बता दिया है। यह मणिरंजित यक्ष वंश में एक काला धब्बा है। इसके कारण पूरा यक्ष वंश बदनाम हो गया। पर इसे छोड़ दो। जीवित होते हुए भी यह मृत समान है''।

चाहते हैं। इसलिए उसने उनसे पूछा, "क्या कहना चाहते हो? निर्भीक होकर कहो।"

गंधर्व ने पहले कहा, "महावीरो, मैं गुलाम यक्षों का नेता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि पर्वत के अंदर जो बेशुमार सोना है, हीरे-जवाहरात हैं, वे हमें भेंट स्वरूप दिये जाएँ।"

यह सुनते ही जीवदत्त और खड़गवर्मा ने एक दूसरे को देखा। खड़गवर्मा ने मुस्कुराते हुए कहा, "गंधर्व नेता की इच्छा अगर राक्षसों के नेता की भी इच्छा हो तो गंधर्व और राक्षसों के बीच भीषण युद्ध होकर रहेगा।"

राक्षसों के नेता ने उसकी बात को काटते हुए सविनय बताया, "प्रभु, लंबे अर्से से हम मणिरंजित के गुलाम रहे। कष्ट और सुखों में हम साथ-साथ रहे। कभी भी हमने आपस में झगड़ा नहीं किया। किसी भी बात को लेकर हम अड़े नहीं रहे। हममें मैत्री की भावना हमेशा बरक़रार रही। मैं न ही सोना चाहता हूँ, न ही हीरे जवाहरात। मैं चाहता हूँ कि आज से पूरा यक्षपर्वत प्रदेश हमारा और हमारी संतान का हो। बस, यही मेरी एकमात्र इच्छा है।"

उसकी इच्छा को सुनकर आश्चर्य में डूबे खड़ग और जीवदत्त ने यक्ष राजा से कहा, "यह सारा प्रदेश आपके राज्य का ही हिस्सा है। औरों को देने का हक़ हमें भला कैसे होगा?"

यक्ष राजा ने तब राक्षसों से कहा, "अपने इस राज्य को मनोपूर्वक तुम्हें समर्पित कर रहा हूँ। अभी से यह तुम्हारा प्रदेश है।"

फिर यक्ष राजा ने खड़ग, जीवदत्त और उनकी पत्नियों को विमान में बैठने के लिए संकेत किया और कहा, "खड़ग और जीवदत्त, जहाँ जाना चाहो, इस विमान में बैठकर जाओ। आज से एक महीने तक इसका उपयोग कर सकते हो। इसे अपना ही समझो। एक महीने के बाद इसे मुझे लौटा देना। तुम लोगों का कल्याण हो।"

"हम आपके कृतज्ञ हैं यक्षराजा।" यह कहकर चारों ने यक्षराजा को प्रणाम किया। विमान उड़ा और पद्म वीरपुर की ओर वायुवेग से चल पड़ा।

(समाप्त)
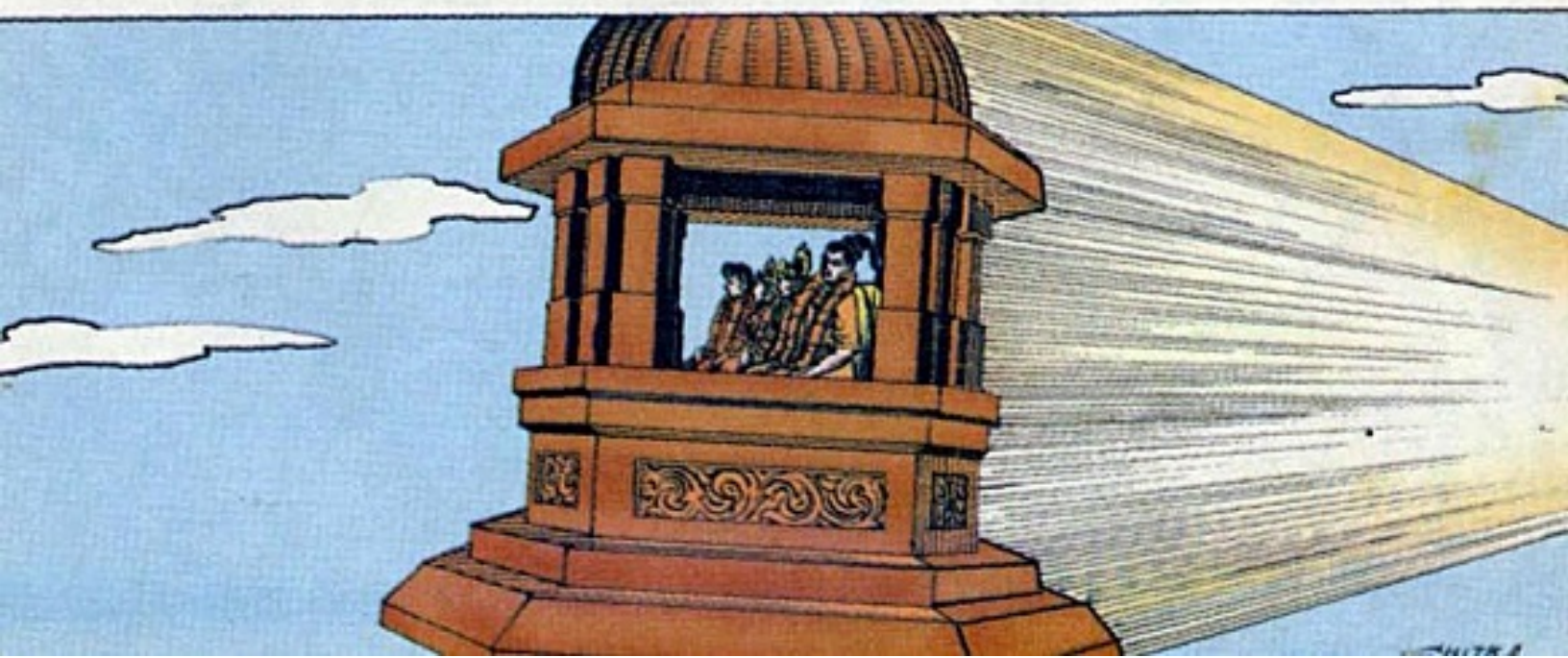
आदर-सत्कार

एक गाँव में पुरुषोत्तम शर्मा नाम के एक पंडित रहते थे। सब यही कहते थे कि उन्होंने शास्त्रों का गहरा अध्ययन किया है और वे उच्च श्रेणी के विद्वान हैं। दूर के गाँव में रहनेवाले रघुपति एक बार उनसे मिलने आये। वे भी पंडित थे।

मध्याह्न भोजन के बाद दोनों चबूतरे पर बैठकर शास्त्र संबंधी वार्तालाप करने लगे। उस समय एक लकड़हारा उधर से गुजर रहा था। पुरुषोत्तम शर्मा को देखते ही उसने सिर से भार उतारा और दोनों हाथ जोड़कर विनयपूर्वक नमस्कार किया।

पुरुषोत्तम शर्मा ने भी हाथ जोड़कर उसे नमस्कार किया और पूछा, "कैसे हो रतन? सब ठीक-ठाक चल रहा है न?"

रघुपति को इस पर आश्चर्य हुआ और उन्होंने पुरुषोत्तम शर्मा से पूछा, "यह आप क्या कर रहे हैं, शर्माजी? आप भला उस लकड़हारे को नमस्कार क्यों करते हैं?"

पुरुषोत्तम शर्मा ने इस पर हँसते हुए कहा, "रतन आदर-सत्कार का महत्व जाननेवाला आदमी है। हमारे पेशे अलग-अलग हो सकते हैं, परंतु हम सब मनुष्य ही ठहरे। हमारे शास्त्र व पुराण भी हमें यही बताते हैं। हमारा जो आदर-सत्कार करता है, उसका आदर-सत्कार करना भी हमारा कर्तव्य है। इसी में है हमारा गौरव और मर्यादा भी।

- किरण राठी.
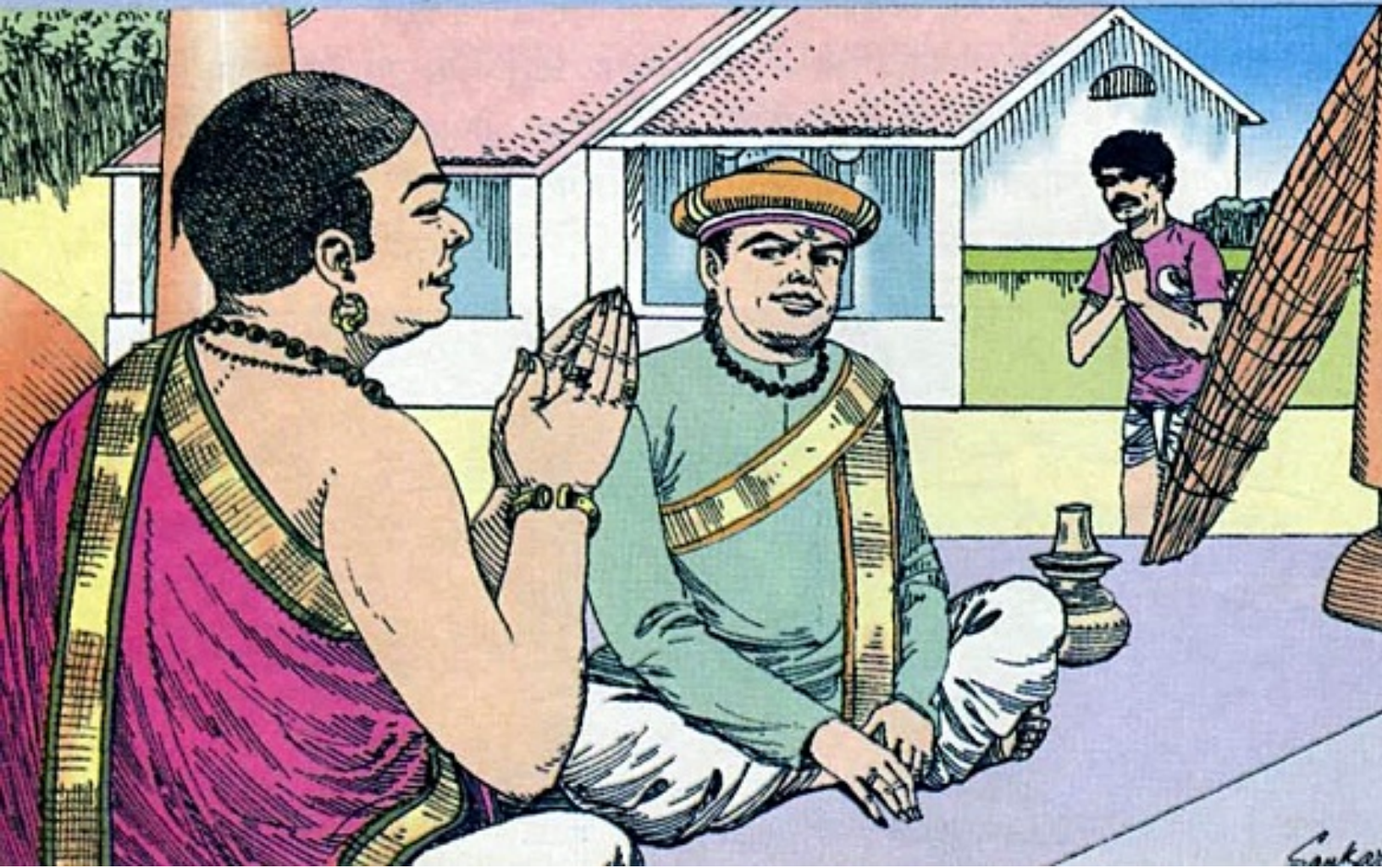
राजा विक्रम
और बेताल की
नई कथाएँ

अनोखा मौन

यह बड़ी ही भयावनी रात थी। मूसल धार वर्षा की बौछार में बादलों की गड़गडाहट से दिल दहल जाते थे। बीच बीच में बिजली की चमक से पिशाचों के खीसें निपोरते हुए बदसूरत चेहरे साफ दिखाई पड़ जाते। राजा विक्रम उस पुराने वृक्ष की गांठदार जड़ों को फाँदता हुआ शाखाओं पर चढ़ गया जहाँ शव लटक रहा था। उसने शव को कंधे पर रखा और वापस लौट पड़ा। उसे निश्चित स्थान पर विचित्र भिक्षु से मिलना था।

"मुझे यहाँ से ले जाने के तुम्हारे दृढ संकल्प का कारण क्या है?'' शव में छिपे

बेताल ने पूछा। लेकिन राजा विक्रम मौन रहा। ''तुम्हारा मौन राजा सुशान्त के समान रहस्यमय है।'' बेताल ने कहा। ''क्या तुमने उसके विषय में सुना है? मैं तुम्हें उसकी कहानी सुनाता हूँ, इससे तुम्हारी यात्रा सुगम हो जायेगी।'' यह कहकर उसने यह कहानी सुनाई :

पुष्पनगर का राजा बुद्धिमान और उदारचेता था। वह साधु-महात्माओं को दान और सुयोग्य कलाकारों व कवियों को उपहार दिया करता था। वह अपनी प्रजा के सुख और राज्य की समृद्धि के लिए यथासंभव भरसक प्रयास करता। यदि उसमें कोई दोष था तो वह था क्रोध। यदि कुछ उसकी मर्जी के मुताबिक नहीं होता तो वह क्रोध से पागल हो जाता। एक बार जब राजकीय रसोइयों ने राजा के आदेश पर विशिष्ट अतिथियों के लिए बन रहे विशेष पकवान बनाने में गड़बड़ कर दी तब न सिर्फ उन्हें नौकरी से हाथ धोना पड़ा, बल्कि उन्हें तुरन्त राज्य से बाहर निकाल दिया गया।

यदि किसी अधिकारी से अपने कर्तव्य पालन में कुछ चूक हो जाती तो उसे नौकरी और प्राण दोनों गँवाने पड़ते। राजा के क्रोधी स्वभाव की इतनी कुख्याति हो गई कि लोग आतंकित रहने लगे।

एक दिन उसके दरबार में एक महात्मा आये। उन्होंने राज्य के मन्दिरों में प्रवचन देने के लिए राजा की स्वीकृति माँगी। ''आप कौन हैं, महात्मन, और आप कहाँ से पधार रहे हैं?'' राजा ने बड़ी शिष्टता से पूछा।

''मैं प्राणानन्द हूँ और मैं अभी हिमालय से आ रहा हूँ जहाँ पिछले दशक से मैं तपश्चर्या में लगा था।'' महात्मा ने उत्तर दिया। ''तपस्या के कारण मेरा मन शांत हो गया है। लेकिन मेरे गुरु का कथन है कि मेरे जीवन का उद्देश्य केवल आत्म-मुक्ति नहीं होना चाहिये, बल्कि दूसरों का भी मार्गदर्शन करना चाहिये। इसीलिए मैं यहाँ आया हूँ।''

राजा प्रभावित हो गया। ''स्वामी जी! यदि आप यहाँ स्थायी रूप से रहकर मेरा और मेरी प्रजा का मार्ग दर्शन करें तो हम सब आप के बड़े आभारी होंगे।'' उसने कहा।

महात्मा ने मुस्कुराते हुए कहा, ''राजन! मैंने निश्चय किया है कि मैं किसी एक स्थान पर स्थायी रूप से निवास नहीं करूँगा। किन्तु आप के प्रेम और उदारशीलता के कारण मैं आप के राज्य से बंध गया हूँ। मैं यहाँ कुछ दिनों के लिए

ठहरूँगा और आप की प्रजा के लिए उपयोगी बनने का प्रयास करूँगा।''

राजा ने राजकीय उद्यान में स्वामी जी के लिए एक कुटिया बनाने का आदेश दिया। उसने उद्यान के माली सुमंगल को बुलाकर स्वामी जी की देख-भाल करने का आदेश दिया।

शीघ्र ही सुमंगल और स्वामी जी गहरे मित्र बन गये। सुमंगल उद्यान के एक मकान में अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ रहता था। हर रोज सुबह प्रार्थना के पश्चात प्राणानंद राजा के साथ कुछ घंटे बिताते थे। राजा सुशान्त बड़े ध्यान से स्वामी जी के बचन सुनता और तदनुसार कार्य करने का प्रयास करता। तब स्वामी जी मंदिरों में जाकर एकत्र व्यक्तियों को प्रवचन सुनाते।

एक दिन राजा और स्वामी जी उद्यान में थे और सुमंगल पास की झाड़ी को छाँट रहा था। उसने देखा कि कुछ मधुमक्खियाँ स्वामी जी को तंग कर रही हैं। वह मधुमक्खियों को भगाने के लिए दौड़कर उनके पास गया। राजा को स्वामी जी के साथ बातचीत के बीच माली का यह व्यवधान अच्छा नहीं लगा। ''तुम्हें हम दोनों के बीच में आने की हिम्मत कैसे हुई।'' उसने डाँटा। ''तुम्हें किसने हस्तक्षेप करने के लिए कहा। यदि मधुमक्खियाँ असहनीय हो जातीं तो क्या मैं स्वामी जी की मदद नहीं करता? दूर हो जा मेरी नज़र से और फिर कभी अपनी शक्ल मत दिखाना।''

सुमंगल हक्का-बक्का रह गया। लेकिन स्वामी जी ने उसका बचाव करते हुए कहा, ''उसे न डाँटो वत्स। आखिर उसकी मंशा तो बुरी नहीं थी। क्रोध करना आसान है, लेकिन क्रोध के आवेश में लिया गया निर्णय गलत सिद्ध होगा। जब क्रोध आये तब चुपचाप रहना सर्वोत्तम होगा। जब तक आप फिर पुराने स्वाभाविक विवेकपूर्ण संतुलित अवस्था में न आ जायें। यदि क्रोध के आवेश में सुमंगल को निकाल देंगे तो हो सकता है वैसा दूसरा योग्य और ईमानदार व्यक्ति न मिले।''

राजा सुशांत ने स्वामी जी की सलाह मान ली और सुमंगल को क्षमा कर दिया।

प्राणानन्द के ज्ञानपूर्ण वचनों का राजा पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ता था। कुछ महीनों के पश्चात स्वामी जी अधीर हो उठे। एक दिन उन्होंने राजा से कहा: ''मेरे जीवन का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों की मदद करना है, न कि केवल आप के राज्य की प्रजा की। मैं अनेक देशों की

यात्रा कर वहाँ के लोगों का मार्गदर्शन करना चाहता हूँ।''

किन्तु राजा उन्हें जाने देना नहीं चाहते थे। तब स्वामी जी द्रवित हुए और बोले, ''मैं हर तीसरे महीने पुष्पनगर आऊँगा और आप के साथ एक महीना व्यतीत करूँगा।'' राजा सुशान्त को स्वीकार करना पड़ा।

तीन महीने बीत गये। एक दिन संध्या समय प्राणानन्द पुष्पनगर वापस आये और सीधे अपनी कुटिया में गये। सुमंगल ने उन्हें कुटिया में आते समय नहीं देखा। अन्धेरा हो गया था और उन्हें प्यास लग रही थी। वे उद्यान के सरोवर से अपने कमण्डल में जल भरने गये। जैसे ही वे कमण्डल से जल भरने लगे कि गड़गड़ाहट की आवाज आई। सुमंगल का कुटीर पास ही था इसलिए उसे आवाज सुनाई पड़ गई। उसने सोचा कि कुछ पशु उद्यान में घुस गये हैं और वे सरोवर पर हैं। झट बाहर आकर उसने सरोवर की दिशा में अपना बर्छा फेंका।

आह! बर्छा स्वामीजी के शरीर में लगा और वे चीख पड़े। सुमंगल ने उनकी आवाज पहचान ली और भयभीत हो उनकी ओर दौड़ा। स्वामी जी कराह रहे थे। सुमंगल उनके चरणों में गिर पड़ा और क्षमा याचना करने लगा। ''मेरी पीठ में से बर्छा निकाल दो ताके मैं शान्तिपूर्वक देहत्याग कर सकूँ।'' स्वामी जी ने कहा। बिलखते हुए सुमंगल ने वैसा ही किया और उनके शरीर को आराम से जमीन पर लेटा दिया।

''क्षमा कर दीजिये। हमसे अनजाने में अपराध हो गया।'' उसने कहा।

स्वामी मुस्कुराये : ''मैं जानता हूँ वत्स! मैंने तुम्हें क्षमा किया।'' और उन्होंने अन्तिम सांस ले ली।

अचानक सुमंगल को भय ने घेर लिया। ''जब राजा को यह खबर मिलेगी तो मुझ पर और मेरे परिवार पर क्या गुजरेगा!'' यह सोच कर वह काँप गया। वह अपने कुटीर में गया और सारी बात पत्नी को बता दी। फिर वे दोनों अपने दोनों बच्चों के साथ रात्रि के अन्धकार में भाग निकले।

अगले दिन पहरेदारों ने उद्यान में सरोवर पर स्वामी जी का शव पड़ा हुआ पाया। उन्होंने सुमंगल की तलाश की पर वह कहीं न मिला। उन्होंने अनुमान किया कि उसीने स्वामी जी की किसी कारणवश हत्या कर दी होगी। उन्होंने राजा को यह खबर पहुँचा दी। राजा आग बबूला हो उठे। उसने पूरे राज्य में सुमंगल को ढूँढ़ निकालने का आदेश जारी किया। लेकिन उसका पता न चला।

सुमंगल ने पडोसी राज्य में नौकरी कर ली। लेकिन वह सुखी नहीं था। वह पुष्पनगर लौट आना चाहता था। एक वर्ष के बाद साहस करके वह पुष्पनगर आया और अपने एक पुराने मित्र से, जो एक दरबारी था, मिला। उसने उससे यह पता करने का अनुरोध किया कि राजा ने उसके अपराध को क्षमा कर दिया है या नहीं।

दरबारी को राजा से सुमंगल की चर्चा करने का एक अवसर मिल गया। राजकीय माली कुछ नये उपकरणों की माँग कर रहा था। दरबारी ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''सुमंगल अत्यंत कुशल माली था। वह उपकरणों पर अधिक व्यय नहीं करता था।''

लेकिन राजा एक शब्द भी न बोला। दरबारी ने सुमंगल को कुछ दिन और ठहरने के लिए

कहा। छः महीनों के पश्चात सुमंगल के अनुरोध पर दरबारी ने पुनः चर्चा उठाई। इस बार भी राजा चुप रहा।

छः महीने और गुजर गये। सुमंगल अब काफी बेचैन हो उठा। इस बार वह अपनी जान दाँव पर लगाकर परिवार के साथ पुष्पनगर लौट आया। और अपने मित्र के पास न जाकर सीधा दरबार में चला गया। उसने राजा के चरणों में गिरकर स्वामी जी की हत्या की पूरी कहानी सुना दी।

''मैं यह सब जानता हूँ सुमंगल। मैं जानता हूँ कि तुमने यह जान बूझकर नहीं किया होगा। तुम लौट आओ और फिर से मेरे राज्य में काम शुरू कर दो।'' राजा ने कहा।

वेताल ने अपनी कहानी समाप्त करते हुए कहा, ''हे राजन, जब सुमंगल के दरबारी मित्र ने दरबार में इसकी दो बार प्रशंसा की तब राजा ने कोई

उत्तर नहीं दिया। लेकिन जब स्वामी जी की दुर्घटनावश मृत्यु के दो वर्ष बाद वह स्वयं आकर राजा के चरणों में गिर पड़ा तब राजा ने उसे वापस बुला लिया। क्या इससे यह पता नहीं चलता कि राजा के व्यवहार में असंगति और विरोधाभास है। क्या सुमंगल को देखने के पश्चात ही उसे यह पता चला कि सुमंगल ने जानबूझकर स्वामी जी की हत्या नहीं की? यदि इन प्रश्नों के उत्तर जानते हुए भी तुम मौन बने रहे तो तुम्हारे सिर के हजार खण्ड हो जायेंगे।

राजा विक्रम ने अविलम्ब उत्तर देते हुए कहा, ''नहीं, राजा सुशान्त के व्यवहार में कोई असंगति और विरोधाभास नहीं है। उसने पहले ही समझ लिया होगा कि स्वामी जी की मृत्यु दुर्घटनावश हुई, जानबूझकर हत्या नहीं की गई, क्योंकि तुमने स्वयं कहा है कि वह बुद्धिमान और विवेकशील राजा था। वह अवश्य ही अपने माली को अच्छी तरह जानता था। उसने सुमंगल की सारे राज्य में खोज बीन करने का आदेश क्रोध के आवेश में दिया, क्योंकि स्वामी जी की असमय अस्वाभाविक मृत्यु से उसे बहुत कष्ट था जिनके प्रति इसकी अपार श्रद्धा थी। हम जानते हैं कि क्रोध राजा की सबसे बड़ी दुर्बलता थी। स्वामी जी ने एक बार उसे सलाह दी थी कि क्रोध के आवेश के क्षणों में कोई निर्णय न लें। जब दरबारी ने सुमंगल की चर्चा की, राजा तब भी उस पर नाराज था। लेकिन उसे अपने परामर्शदाता के वचन याद थे, इसलिए वह चुपचाप था। उसे भय था कि क्रोध में वह सुमंगल का कुछ अपहित न कर दे। दो वर्षों के पश्चात जब सुमंगल दुखी होकर दरबार में आया, तब तक राजा का क्रोध शांत हो चुका था। इसलिए उसका व्यवहार विवेकपूर्ण था। राजा केवल अपने परामर्शदाता के ज्ञानयुक्त बचन का पालन करने के लिए ही चुप रहा और समय के साथ अपने क्रोध के शान्त हो जाने पर उस क्षण की प्रतीक्षा करता रहा जब वह सुमंगल के साथ संतुलित मनःस्थिति में बात करने के योग्य हो सके।''

राजा के मौन भंग होते ही बेताल पुनः सरक कर पुराने वृक्ष पर पहुँच गया। राजा विक्रम ने म्यान से तलवार खींच ली और उसका पीछा किया।

विघ्नेश्वर

सत्यलोक में कमल के आसन पर बैठकर ब्रह्मा दिन भर सृष्टि करके थक गये और कल्प का अंत समीप आते ही उन्हें निद्रा के नशे ने घेर लिया। निद्रा की खुमारी में जब भी वे जंभाइयाँ लेते, तब-तब पहाड़ों की चोटियाँ चटककर आग के शोले छितराने लगतीं। निद्रा के समय ब्रह्मा की आँखें जब गीली हो जातीं तब आसमान में प्रलयकालीन मेघ हाथी की सूंड़ों जैसी धाराओं में बरसकर सारी दुनिया को जलमय करने लगते। उनकी पलकें जब भारी हो गईं तब सारी दिशाओं में अंधकार छा गया।

उस प्रलयकालीन स्थिति में ब्रह्मदेव सो गये। प्रलय उनके लिए रात का समय है। पुन: नये कल्प के आरंभ का समय निकट आया है। नये जगत पर जब प्रकाश फैलने का समय आया, तब सरस्वती देवी वीणा हाथ में लेकर भूपाल राग का आलाप करने लगी। तब जाकर ब्रह्मा की नींद खुली।

ब्रह्मदेव ने पद्मासन लगाकर अपने चारों मुखों से दसों दिशाओं में नज़र डाली।

नीचे का सारा जगत जलमय हो पर्वतों के समान लहरों से कल्लोलित था। उन लहरों के बीच एक जगह सफ़ेद प्रकाश की एक किरण दिखाई दी। उस प्रकाश में लहरों पर तिरते एक बड़े वट पत्र पर चन्दामामा जैसा एक शिशु लेटकर अपने दायें पैर का अंगूठा चुबलाते दिखाई दिया।

ब्रह्मा ने हाथ जोड़ और आँखें मूँदकर ध्यान किया। आँखें खोलने पर उन्हें एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया।

ब्रह्मा अनुभवपूर्वक जान गये कि वह शिशु कोई और नहीं, बल्कि विश्व विराट स्वरूपी परब्रह्म हैं। लेकिन अब उस शिशु का सर हाथी के सिर के समान है और वह अपनी छोटी-सी सूँड से दायें पैर को पकड़कर मुँह में रखता-सा दीख रहा है।

शिशु का मुख प्रसन्न था और वह चन्द्रमा की कांति से प्रकाशमान था। उसके चार हाथ थे। ब्रह्मा आश्चर्य में आकर उस शिशु की ओर देख

१. वट पत्र बाल गणपति

ही रहे थे कि अचानक वह दूसरे ही पल में पत्ते के साथ अदृश्य हो गया और उस प्रदेश में मिट्टी का एक टीला मात्र दिखाई दिया।

धीरे-धीरे जल में से विशाल भूभाग और समुद्र उत्पन्न हुए।

ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना करना प्रारंभ किया। उन्होंने शुरू में पर्वत और नदियों के पैदा हो जाने का संकल्प किया और अपने कमंडलु से पानी लेकर जगत पर छिड़क दिया। इसके बाद वृक्ष, फसल और खनिजों का संकल्प किया। तदनंतर समुद्र में मछलियों, जमीन पर जानवरों और कृमि-कीट तथा पक्षियों की सृष्टि की। इसके बाद मनुष्यों की सृष्टि करने का संकल्प करके कमंडलु के जल को फिर छिड़क दिया।

उधर ब्रह्मा सृष्टि की रचना में डूबे हुए थे, इधर सरस्वती वीणा बजाने में लगी थीं। न मालूम क्यों, अनायास ही वीणा से अपश्रुति निकल पडी। सरस्वती ने चकित होकर नीचे की ओर देखा और वे एकदम आश्चर्य में पड़ गईं। ब्रह्मा अपनी अर्द्धांगिनी के चकित होने का कारण समझ न पाये। उन्होंने अपने कमल के आसन पर से ही झुककर नीचे देखा कि पर्वत सब औंधे मुँह हो रहे हैं। उनकी तलहटियाँ पृथ्वी पर पडते सूर्य के प्रकाश को रोकते हुए छत्रों की भांति बढ रही हैं। नदियाँ समुद्रों से निकलकर ऊँचे प्रदेशों की ओर बह रही हैं। वृक्ष भी उलट रहे हैं और उनकी जड़ें आसमान को छू रही हैं।

समुद्र की लहरों पर तिरते जलचर उछल-कूद कर रहे हैं। कुछ सीध में बढ़ रहे हैं। कुछ पक्षियों की भांति उड रहे हैं।

जानवर विकृत आकार में पैदा हुए। उनमें से कुछ जानवरों के सिर न थे, कुछ जानवरों के पिछली टांगें न थीं, कोई एक पैरवाला जानवर था, कोई तीन पैरोंवाला था, कुछ के तो आँखें व कान थे, पर मुँह न थे। किसी जानवर की पूँछ में सर था, तो किसी के सर में पूँछ उगी थी। कुछ पक्षियों के पंख न थे, कुछ के पैर न थे, इसलिए वे लुढ़कते व लोटते थे।

ब्रह्मा ने घबराकर अपनी सर्वोत्तम सृष्टि मनुष्य की ओर व्यग्रतापूर्वक देखा।

कुछ मनुष्यों के दो सर थे, एक पुरुष का था, तो दूसरा नारी का।

पुरुष कोई बित्ते भर का था, तो कोई बालिश्त भर का। नारियाँ तो बड़े-बड़े हाथियों तथा ताड के पेड़ों जैसी थीं। कुछ की पीठों पर सर चिपकाये से थे। किसी के चार पैर थे तो किसी के दो, तीन

या एक ही पैर था। कुछ लोगों के पेट पर बड़े-बड़े मुँह लगे थे जो कबंधों के समान आक्रंदन कर रहे थे। जानवर मुँह बायें दीनतापूर्वक चिल्ला रहे थे। गूँगा बन ताक रहे थे। वे सब ऐसे खींचातानी करते-नाचते से लगते थे, मानो सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की निंदा कर रहे हों।

एक बालिश्त भर का आदमी ताड़ के पेड़ जैसी विकृत आकृतिवाली नारी को दिखाकर आसमान की ओर देखते चीख रहा था-"हे ब्रह्मदेव ! इस तरह की नारी के साथ मैं कैसे अपनी गृहस्थी चला सकता हूँ?"

कुछ विकृत आकारवाले मनुष्य रोते हुए ब्रह्मा की निंदा कर रहे थे-"हे ब्रह्मदेव ! आप तो चतुर्मुखी कहलाते हैं। आप चार मुखों के होते हुए भी ऐसे लगते हैं जैसे आप का कोई वास्तविक सिर ही नहीं है, यानी दिमाग नहीं है। वरना आप हमको इस रूप में क्यों पैदा करते?"

ये सब चीख-चिल्लाहटें और आक्रंदन देख सचमुच ही ब्रह्मा के चारों सिर चकरा गये। उनकी आठों आँखों के सामने अंधेरा छा गया। चकित हो ब्रह्मा ने सरस्वती की ओर असमंजस भरी दृष्टि दौड़ाई। उनके चारों सरों को सफ़ेद बने देखकर सरस्वती मुस्कुरा उठीं और मौन रह गईं।

ब्रह्मा स्वगत में सोचते हुए आख़िर जोर से चिल्ला उठे-"मेरी सृष्टि का यह हाल क्यों हुआ? मैंने तो सही ढंग से सृष्टि करने का संकल्प करके ही इस जगत के निर्माण की योजना बनाई। आख़िर ऐसा क्यों हो गया?" ब्रह्मा की यह आवाज़ दसों दिशाओं में गूंज उठी। असमंजस भरी चकित दृष्टि दौड़ानेवाले ब्रह्मा को एक अपूर्व प्रकाश दिखाई पड़ा। उस प्रकाश में उन्हें एक अद्भुत मूर्ति दिखाई दी। उस मूर्ति के हाथी का सिर था। उसके चार हाथ थे। वे चारों हाथ क्रमश: पाश, अंकुश, कलश और परशु धारण किये हुए थे। वह पूर्ण चन्द्रमा की भांति प्रकाशमान था। उसकी सफ़ेद शाल सारे आसमान में फड़फड़ा रही थी। उस वक़्त सरस्वती ने अपनी वीणा में ओंकार नाद किया। सरस्वती देवी की उंगलियाँ अपने आप वीणा पर नाद नामक्रिया का राग ध्वनित करते माया माळव गौळ राग आलापित करने लगीं, फिर वह राग हंसध्वनि राग में अपने आप बदल गया। गजानन की आकृति में साक्षात्कार हुए मूर्ति ने वट पत्र पर खड़े हो ब्रह्मा को अभय मुद्रा में आशीर्वाद दिया। उनके चारों तरफ़ शरत्कालीन पूर्णिमा की चांदनी जैसी रोशनी फैली हुई थी।

ब्रह्मा ने अप्रयत्न ही हाथ जोड़कर प्रणाम करते

हुए पूछा-''हे महानुभाव ! आप अद्‌भुत मूर्ति कौन हैं? मैं ऐसा अज्ञानी हूँ कि आप को समझ नहीं पा रहा हूँ। इसलिए मुझ पर अनुग्रह कीजिए।''

''वत्स, ब्रह्मदेव ! संकल्प के पीछे सदा विकल्प भी दौड़ा करता है। उसी को विघ्न कहते हैं। विघ्न को रोककर संकल्प की पूर्ति करानेवाला मैं विघ्नेश्वर हूँ। विघ्नों का नेतृत्व करनेवाले विकल्प को मैं अपनी कुल्हाड़ी द्वारा भेद देता हूँ और प्रत्येक कार्य को पूर्ण कलश की तरह सफल बनानेवाला विघ्न विनायक हूँ। पंच भूत कहलानेवाले पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश रूपी भूत गणों का अधिपति बना हुआ मैं गणपति हूँ। खाद्य पदार्थों तथा फसलों को नष्ट करनेवाले मत्त हाथी जैसे विघ्नों को मैं अपने तेज अंकुश से क़ाबू में रखता हूँ और उन्हें अपने पाश नामक मजबूत रस्से से बांध देता हूँ। इसलिए आप मुझे भविष्य में विघ्नेश्वर पुकारा कीजिए।'' यों विघ्नेश्वर ने गंभीर स्वर में समझाया।

इस पर ब्रह्मा ने कहा-''हे देव ! हे विघ्नेश्वर ! मेरी सृजन शक्ति में क्यों इस प्रकार भयंकर विघ्न पैदा हुआ? कृपया आप मेरे द्वारा उत्तम सृष्टि करने लायक़ कोई मार्ग विस्तारपूर्वक समझाइये।''

''आप को विघ्न की जानकारी कराने के लिए ही यह सब घटित हुआ है। वटपत्र पर बाल गणपति के रूप में मैंने ही आपको दर्शन दिये थे। उस वक़्त आप मेरे बारे में सोच नहीं पाये। मेरे बारे में सोचने का मतलब है कि विघ्न के संबंध में पहले ही सावधान रहनेवाला ज्ञान प्राप्त करना। मैं उसी ज्ञान का स्वरूप हूँ। ब्रह्मा से लेकर बुद्धि रखनेवाले प्रत्येक प्राणी को अपना कार्य प्रारंभ करने के पूर्व विघ्न से बचने के लिए और कार्य की सफलता के लिए उचित सावधानी बरतनी चाहिए। हाथी अपना क़दम आगे बढ़ाने के पहले जमीन की मजबूती को परख लेता है। प्राणियों में हाथी सब से बड़ा है, उसी प्रकार बुद्धि-बल भी ज्ञान के क्षेत्र में बड़ा है। हाथी जैसा मेधा प्राप्त करना चाहिए; इसके संकेत के रूप में मैं गजानन की आकृति में हूँ। आप जब सो रहे थे, तब सोमकासुर नामक राक्षस ने आप के चारों वेदों का अपहरण कर लिया और उन्हें समुद्र तल में छिपा दिया है। महाविष्णु ने मत्स्य का अवतार धारण करके उस राक्षस का संहार किया और आप के वेद लाकर वट पत्र शायी बने मुझे सौंप गये हैं। लीजिए, इनको फिर से ग्रहण कर आप अपनी सृष्टि का कार्य निर्विघ्न संपन्न कीजिए।'' यों समझाकर विघ्नेश्वर ने ब्रह्मा के हाथ वेद सौंप दिये।

ब्रह्मा वेदों को ग्रहण कर परम प्रसन्न हुए और

विघ्नेश्वर की स्तुति करने लगे-"हे विघ्नेश्वर ! सृष्टि का संकल्प करने के पहले ही आपका ध्यान करके, हृदय पूर्वक आपकी पूजा करके अपने कार्य में प्रवृत्त होऊँ, ऐसा वर प्रदान कीजिए। इस वक्त मेरी सृष्टि जो बेढंग बनी हुई है, उसे वापस होने लायक वर दीजिए।"

इसके बाद विघ्नेश्वर के प्रभाव से पहले की वक्रतापूर्ण सृष्टि पल भर में गायब हो गई। इस पर विघ्नेश्वर ने ब्रह्मा को पुन: समझाया-"हे ब्रह्मदेव ! मैं वक्रता को तुंड-तुंडों के रूप में टुकड़े-टुकड़े करता हूँ। इसलिए मैं अपने नाम वक्रतुंड को सार्थक बनाने के लिए अपनी सूंड को वक्र रखता हूँ। वक्रतुंड के रूप में मेरा ध्यान करके जो भी कार्य शुरू किया जाता है, उसमें कोई वक्रता या टेढ़ापन नहीं होता। आप अपनी इच्छा के अनुरूप मेरा ध्यान करके सृष्टि की रचना प्रारंभ कर दीजिए। सृष्टि करना एक कला है। किसी भी प्रकार के टेढ़ेपन या वक्रता के बिना ही जगत आपके द्वारा रचित कला निलय बनकर शोभायमान रहेगा। आप ही के जैसे जगत के सभी प्राणियों की पहुँच में रहकर उनकी प्रथम पूजा पानेवाले विघ्नेश्वर के रूप में, समस्त विघ्नों से रक्षा करते हुए संकल्प-सिद्धि करानेवाले सिद्धि विनायक के रूप में, समस्त गणों के अधिपति के रूप में गणपति बनकर शिवजी और पार्वती के पुत्र के रूप में मैं अवतार लूँगा।" यों कहकर ब्रह्मा को आशीर्वाद दे वह मूर्ति अदृश्य हुई।

इस पर सरस्वती देवी ने हिंदोळ और श्रीराग के द्वारा मंगलदायक स्वरों को वीणा पर ध्वनित करके इस प्रकार सुनाया कि आकाश भी पुलकित हो उठा।

ब्रह्मदेव ने "विघ्नेश्वराय नम:" कहकर सृष्टि का उपक्रम किया। सृष्टि का कार्य पहले से भी कहीं अधिक सुंदर और निर्विघ्न चला। गंभीर व विशाल पर्वत-पंक्तियाँ, अमृत तुल्य जल से भरी नदियाँ, सुंदर वन, रंग-बिरंगे खिलौनों जैसे जानवर, शारीरिक और मानसिक दृष्टि से भी शक्तिशाली बने मानवों से यह सारा जगत ब्रह्मा के कला निलय के रूप में शोभायमान हो गया। वाग्देवी सरस्वती ने अपनी वाणी के संगीत के रूप में प्राणि मात्र को स्वर प्रदान किया। प्राणी समुदाय समस्त शुभ लक्षणों के साथ विकसित होने लगा। जटाओं को फैलानेवाले वट वृक्ष की भांति जगत फैल गया।

समाचार झलक

नक्षत्र और वृक्ष

हिन्दू पंचांग में अश्विनी से लेकर रेवती तक २७ नक्षत्रों का वर्णन है। प्रत्येक हिन्दू का जन्म किसी न किसी नक्षत्र के अन्तर्गत ही होता है। प्रत्येक नक्षत्र के साथ किसी न किसी पुष्प, पशु, पक्षी और वृक्ष का नाम जुड़ा होता है। तमिलनाडु स्थित कोयम्बटूर की वैदिक इंडिया सोसाइटी ने अटकमंड या उदागमंडलम के मार्ग में पड़नेवाले निकटस्थ मेट्टुपालयम के एक विद्यालय को चुना है और वहाँ के छात्रों को अपने-अपने जन्म के नक्षत्र से सम्बन्धित वृक्ष का पौधा रोपने के लिए प्रेरित किया है। छात्रों ने प्रतिज्ञा की है कि वे जब तक विद्यालय में रहेंगे, उन पौधों की देखभाल करेंगे। वैदिक इंडिया सोसाइटी अब देश के सभी विद्यालयों में 'नक्षत्र वन' के सन्देश को प्रचारित करने पर विचार कर रहा है।

अच्छी धुलाई के लिए

सिलवेस्टर तीन महीने का बिल्ला है। कोपेनहेगेन के एक फ्लैट में उस पालतू पशु के मालिक ने ध्यान नहीं दिया कि वह कब वाशिंग मशीन में कूद गया। उसकी चीख सुनने के बाद ही उसे यह पता चला। पानी खदबदा रहा था। और वह मशीन इसलिए नहीं खोल पाई कि उसने उसे टाइमर पर सेट कर रखा था। जब बिल्ले को बाहर निकाला गया तो वह भौंचक था और मशीन में प्राणवायु के अभाव में नीला पड़ गया था। उसे तुरंत पशु-चिकत्सालय में दिखाया गया जहाँ वह कुछ ही दिनों में चंगा हो गया। क्या तुम जानना नहीं चाहोगे कि यह कैसे हुआ? उसने वाशिंग मशीन खुली देखी और उसमें छलांग लगा दी, संभवत: अच्छी धुलाई के लिए!

तड़ित- प्रतिरोधी

सिंगापुर का नगर-राज्य अपने वृक्षों का बड़ा ध्यान रखता है। हाल में यह पता चला कि औसतन कम से कम दस वृक्ष प्रतिवर्ष बिजली गिरने से मर जाते हैं।

दो या तीन तो तत्क्षण खत्म हो जाते हैं, अन्य फफूंद के शिकार बनकर क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। इसलिए उन्हें नष्ट कर दिया जाता है ताकि आस-पास के बृक्षों पर उसका प्रभाव न पड़े। पौर अधिकारियों ने अब निश्चय किया है कि वृक्षों पर तड़ित-संवाहक लगाकर बज्रपात से उनकी रक्षा की जायेगी। ताम्र-संवाहक वज्रपात को ग्रहणकर उसे सीधे भूमि में ले जायेंगे और वृक्ष क्षतिग्रस्त होने से बच जायेगा। प्रत्येक संवाहक का मूल्य तीन हजार अमरीकी डॉलर है। तीस मीटर से अधिक ऊँचाई के लगभग एक सौ बृक्षों को ऐसी सुरक्षा प्रदान करने के लिए चुना गया है। निस्सन्देह यह एक अनुकरणीय प्रयास है।

सैमसन और डेलिला

नहीं, नहीं, ये ओल्ड टेस्टामेंट वाले नहीं, बल्कि लॉस एंजिलिस में बौन न्यूस के दो श्वान हैं। ये नाम वहाँ की एक निवासीन ५८ वर्षीय बारबरा फियरो द्वारा उन्हें दिये गये हैं, जिसे विचित्र परिस्थितियों में ये मिले। एक छोटी कुत्ती (लैप डाग) को, जो देखने में अन्धी लगती थी, एक जर्मन शेफॅड फुटपाथ पर चलने, लाल बत्ती पर रुकने और सड़क पार करने में मार्गदर्शन करता था। उसने उन दोनों का कुछ दिनों तक निरीक्षण किया और पाया कि वे बराबर साथ-साथ रहते हैं। वह उनके व्यवहार पर चकित थी और यह देख कर आश्चर्य करती थी कि जब बड़ा कुत्ता छोटी कुतिया को टोकती या रुकने का संकेत देने के लिए उसे प्यार से किक करती तो बह तुरंत आज्ञापालन करती। सहृदय महिला उन अनाथ श्वानों को अपने घर ले गई और बाइबल के युगल प्रेमियों के नाम से इन्हें बुलाने लगी।

वाग्विदग्ध - बीरबल

एक दिन सम्राट अकबर दरबार में बैठे थे। एक दरबारी ने सामने आकर तीन बार सलाम किया और कहा : "इस्फाहन से एक नये प्रकार का इत्र आया है। क्या शहनशाह अपनी राय देने की मेहरबानी फरमायेंगे?" उसने सम्राट की तलहथी पर एक छोटी-सी शीशी रख दी।

अकबर ने शीशी खोली और उसे सूंघा। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। उसने दरबारियों पर एक नज़र डाली। "तुम सबने मीर शमसुद्दीन से यह शीशी लेते हुए मुझे देखा है। क्या तुममें से कोई यह बता सकता है कि देनेवाले का हाथ लेनेवाले के हाथ से कब नीचे होता है?" उसने उत्तर की प्रतीक्षा की।

शमसुद्दीन घबरा गया। क्या सम्राट की तलहथी पर शीशी रखकर उसने गलती कर दी? उसने सम्राट की तलहथी पर नज़र डाली। वह कुछ कहने ही वाला था कि सम्राट को उसने हाथ हिलाते देखा। "क्या तुम्हारे पास कोई उत्तर है?"

दरबारियों में कानाफूसी होने लगी। यह ठीक है कि अकबर को दरबारियों से उलझन भरे सवाल पूछने में मजा आता था। आज के सवाल से वे परेशान थे। शमसुद्दीन अपने स्थान पर लौट आया।

दूसरा दरबारी उठा। ''क्या कोई फर्क पडता है शहनशाह, चाहे एक हाथ दूसरे से ऊपर हो या नीचे?'' एक बार फिर सम्राट के चेहरे पर मुस्कान खिल गई।

अकबर ने चारों ओर नजर डाली जैसे किसी चेहरे की तलाश कर रहे हों। ''बीरबल कहाँ है?'' उन्होंने पूछा। सबकी आँखें अकबर के प्रिय दरबारी बीरबल को तलाशने लगीं।

'हम यहाँ हैं शहनशाह !'' दरबारियों की आँखें कालीन-पथ की ओर मुड़ गईं। ''बीरबल!'' सम्राट ने अभिवादन किया। ''तुम मेरे सन्देह को दूर करने के लिए ठीक वक्त पर आ गये।'' सम्राट ने अपना सवाल दुहराया।

बीरबल ने दरबारियों की ओर देखा। फिर वह सम्राट के पास गया। उसने अपनी नासदानी निकाली, उसका ढक्कन खोला और उसे तलहथी पर रखकर सम्राट की ओर बढ़ा दिया। अकबर ने एक चुटकी सुंघनी उठा ली। बीरबल ने मुस्कुराते हुए कहा, ''जब नास पेश किया जाता है तब उसका हाथ लेनेवाले के हाथ से नीचे होता है।''

शास्त्रीय भारतीय नृत्य

पाँवों के थिरकन पर तबला के बोल

सोलहवीं शताब्दी में मालवा के युवा और सुसंस्कृत शासक बाज़ बहादुर को लड़ाई में हार जाने के बाद नर्मदा घाटी के एक खूबसूरत शहर मंडू में वापस लौटना पड़ा। वहाँ उन्होंने एक लम्बी प्रेम-लीला के बाद सुन्दर राजपूत राजकुमारी रूपवती से विवाह किया। उसने सोचा होगा कि वे उसके पश्चात सदा सुखी जीवन बिता पायेंगे। लेकिन होनी कुछ और थी। सम्राट अकबर ने आगरे में रूपमती की सुन्दरता की खबर सुनकर मंडू के प्रसिद्ध किला को जीतने और रानी को उठा लाने के लिए सेना भेजी।

एक भयानक युद्ध के बाद बाज बहादुर की सेना के पाँव उखड़ गये लेकिन वह स्वंय बच निकला। रानी रूपमती ने शत्रुओं के हाथ से बचने के लिए आत्महत्या कर ली। यद्यपि मुगलों की विजयी सेना अकबर के लिए रूपमती को नहीं ले जा सकी, फिर भी वे कुछ मूल्यवान ले गये: वहाँ की स्थानीय नृत्य परम्परा। इतिहास बताता है कि मंडू और पडोसी स्थानों से लगभग ३५० नृत्य कलाकारों को ले जाकर मुगल दरबार में पेश किया गया।

बर्तमान भारतीय नृत्य परम्परा मुगल दरबार में कैसे पहुँची, यह इसका एक उदाहरण है। और भी अनेक अधिक सुखद उदाहरण थे जिनमें दो सांस्कृतिक परम्पराओं का संगम हुआ है: स्थानीय हिन्दू कला परम्परा तथा मुस्लिम परम्परा। हिन्दू और मुस्लिम दो विभिन्न संस्कृतियों के संगम ने ही कत्थक नृत्य को विकसित किया।

अकबर के बहार के दिनों में मुगल और राजपूत दरबारों के बीच अनेक क्रिया-कलाप होते रहते थे। इससे एक पृथक भारतीय-मुगल-कला-परम्परा का द्रुत विकास हुआ। कत्थक एक ऐसी ही परम्परा थी।

कत्थक ने मन्दिरों से शास्त्रीय नृत्य के बहिर्गमन और दरबारों तथा अन्य धर्म निरपेक्ष स्थलों में प्रवेश को अंकित किया।

अठारहवीं शताब्दी तक कत्थक एक समर्थ नृत्य परम्परा के रूप में प्रस्फुटित हो चुका था।

इसने अपने लिए अन्य नृत्य शैलियों से पृथक कई प्रविधियाँ और व्याकरण विकसित कर लिया।

यहाँ तक कि सोलहवीं शताब्दी में भी कत्थक नर्तक चुस्त चूड़ीदार पायजामा पहनते थे। मुगल चित्रकलाओं से पता चलता है कि जब नृत्यकार पूरी लम्बाई का लहँगा पहनते थे तब भी चूड़ीदार अन्दर से दिखाई देता था। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में नृत्यकारों ने अनेक घंटियों के साथ मोटे पायल - घुंघरू या नूपुर पहनना शुरू कर दिया था।

कत्थक और अन्य नृत्य शैलियों में मुख्य अन्तर यह है कि जबकि अन्य शैलियाँ स्वरमाधुर्य को नियंत्रित करनेवाले संगीत के दोनोंपक्षों - स्वर और राग पर निर्भर करती हैं, केवल कत्थक मुख्य रूप से ताल पर या संगीत की लय संरचना पर निर्भर करता है। यह नृत्य शैली जटिल पद-संचलन और क्लिष्ट लय-रचना के लिए सुज्ञात है।

नृत्य रचना का प्रसंग पुराण खास कर कृष्ण लीला से लिया जाता है तथा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर स्वरबद्ध किया जाता है। वाद्य संगत सामान्यत: सारंगी और तबला पर किया जाता है। कत्थक को लोकप्रिय बनाने तथा इसे पुनर्स्थापित करने का श्रेय महाराज बिन्दादीन और उनके भाई लखनऊ के कालका और उनके बंशज अचन महाराज और लच्छू महाराज जैसे जनश्रुत नर्तकों को जाता है। बीरजू महाराज तथा शंभु महाराज जैसे अन्य नर्तकों ने भी इसे गतिमान नृत्य शैली के रूप में स्थापित करने में योगदान दिया है।

सामान्यत:

- कत्थक नर्तक एक कन्धे के स्तर से दूसरा कन्धा ऊपर उठाता है। यह प्रविधि कसकमसक कहलाती है।
- कत्थक नर्तक अपनी कूद और चक्कर से दर्शकों को मुग्ध कर देता है। यह संभवत: एक मात्र नृत्यशैली है जिसमें नर्तक दोनों पाँव एक साथ उठाता है और कुछ देर तक हवा में प्रलम्बित रखता है। कत्थक चक्कर के लिए भी ख्यात है। प्राय: यह नृत्य के चरमोत्कर्ष का द्योतक है।
- कत्थक शायद एक मात्र शास्त्रीय नृत्य शैली है जिसमें नर्तकी अपने पद-झंकार के बोल या लय-रचना का विवरण स्वंय बोलती है।

भारतीय
पर्व

मकर संक्रान्ति

रंगबिरंगा त्योहार मकर संक्रान्ति प्रत्येक वर्ष जनवरी महीने में समस्त भारत में मनाया जाता है।

इसी दिन से उत्तरायण प्रारंभ हो जाता है जब उत्तरी गोलार्ध सूर्य की ओर मुड़ जाता है। परम्परा से यह विश्वास किया जाता है कि इसी दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है।

यह बिश्वास किया जाता है कि इस अवधि में देहत्याग करनेवाले व्यक्ति जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाते हैं। महाभारत महाकाव्य में बयोवृद्ध योद्धा पितामह भीष्म पांडवों और कौरवों के बीच हुए कुरुक्षेत्र युद्ध में सांघातिक रूप से घायल हो गये थे। उन्हें इच्छा-मृत्यु का बरदान प्राप्त था। पांडव बीर अर्जुन द्वारा रचित बाणशैया पर पड़े वे उत्तरायण अवधि की प्रतीक्षा करते रहे। उन्होंने सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने पर ही अंतिम सांस ली जिससे उनका पुनर्जन्म न हो।

तमिलनाडु

तमिल पंचांग में पोंगल सर्वाधिक महत्वपूर्ण पर्वों में से एक है। यह सस्य पर्व यानी नई फसल की कटाई के अवसर पर मनाया जानेवाला पर्व चार दिनों तक रहता है जिसका मुख्य उत्सव मकर संक्रान्ति के दिन होता है।

पर्व के प्रथम दिवस को भोगी कहते हैं। सभी ग्राम्य क्षेत्रों में घरों को साफ किया जाता है तथा पुरानी व अवांछनीय बस्तुओं को सबेरे अलाव में जला दिया जाता है।

इसके बाद पोंगल आता है। ग्रामों में, किसान मिट्टी के नये बर्तन लाते हैं। इस दिन नई फसल

का चावल तथा ताजी और मौसमी सब्जियाँ पकाई जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वत्र सभी समुदाय के लोग मिलकर मिट्टी के बड़े-बड़े बर्तनों में नया चावल पकाते हैं।

शहरों में भी चावल और गुड़ से मधुर पकवान बनाने की परम्परा है जिसे चकरई पोंगल कहते हैं।

सभी घरों के सामने बने रंगोली और कोलम तथा दरवाजों पर सजी आम्र पल्लवों की मालाओं से वातावरण आनन्दमय और रंगीन हो जाता है। तब सूर्यदेव की पूजा की जाती है।

पर्व का दूसरा दिन माटू पोंगल कहलाता है जब गायों और बैलों का मानव-कल्याण में इनके योगदान के लिए सम्मान किया जाता है।

गोपालक अपने पशुओं को स्नान कराते हैं तथा उनकी गर्दन और सींगों को रंगों और छोटी घण्टियों से सजाते हैं और फिर उन्हें उस दिन विशेष रूप से बनाई गई पोंगल खिलाते हैं।

राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में इस दिन का मुख्य आकर्षण होता है परम्परागत बृषभ-युद्ध। इस अवसर पर बृषभ दौड़ का भी आयोजन किया जाता है।

पर्व के अन्तिम दिन को कानुम पोंगल कहते हैं। इस दिन परिवार के सभी लोग बन भोज के लिए बाहर जाते हैं अथवा अपने सम्बन्धियों और प्रियजनों से मिलते हैं। कुछ मंडलों में इसे कन्नी पोंगल के रूप में मनाते हैं। युवतियों के अनेक समूह परम्परागत सजावट में बन-ठन कर प्रचलित प्रथा के अनुसार घरों के सामने कोलाट्टम और कुम्मी नाम के नृत्य का प्रदर्शन करते हैं। वहाँ के निवासी उन्हें पुरस्कार के रूप में पैसे और गन्ना देते हैं।

आन्ध्र-प्रदेश

धूम्र और कोहरा तथा सुबह-सुबह की शीतल हवाएँ आन्ध्र प्रदेश में नई फसल के पर्व के आगमन के सूचक हैं। पर्व ठीक तमिलनाडु के समान मकर संक्रान्ति से एक दिन पूर्व भोगी से प्रारम्भ होता है।

भोगी के दिन घरों को सफाई और चूना-पुताई के बाद सजाया जाता है। प्रात:काल सवेरे उत्सवाग्नि जलायी जाती है जिसके चारों ओर लोग बैठकर गाते हैं।

मकर संक्रान्ति को पेडा पंडुगा या बड़ा पर्व कहा जाता है। इस दिन किसान श्रमिकों और

सेवकों को, जो खेती में उनकी मदद करते हैं, भोज देते हैं।

पर्व के तीसरे दिन को कनुमु कहते हैं। यह आराम करने और अच्छे-अच्छे पकवान खाने का दिन होता है। इस अवसर पर दौड़, खेलकूद तथा भेड़ों, बैलों और मुर्गों की लड़ाई का भी आयोजन किया जाता है।

आन्ध्र प्रदेश के कुछ भागों में पर्व के अन्तिम दिन मुक्कानुमु मनाते हैं, जिसमें बैलों और गायों को खूब खिलाया पिलाया जाता है, उनकी पूजा की जाती है और उनकी शोभायात्रा निकाली जाती है।

असम

असम में मकर संक्रांति का पर्व आमोद-प्रमोद, उल्लास और प्रीतिभोज का अवसर होता है। यहाँ इसे माघ बीहू या भोगली बीहू कहते हैं। भोग शब्द का अर्थ है खाना या आनन्द प्राप्त करना।

पर्व की पूर्व सन्ध्या और पौष के अन्तिम दिन खेत में एक कामचलाऊ कुटिया बनायी जाती है, जिसे भेलाघर कहा जाता है। फसल कटने के बाद यह उजाड़ पड़ा रहता है। मेजी उत्सव का एक आवश्यक भाग है। यह जलावन के कुन्दों से निर्मित एक दूसरे पर रखा हुआ एक मंच होता है। इसे चारों ओर से बाँस से घेर दिया जाता है।

स्त्रियाँ चावल की मीठी रोटी तथा अन्य पकवान बनाते हैं। वे रातभर मेजी के चारों ओर आनन्द मनाते हैं। प्रातः होने पर वे विधिवत स्नान कर प्रार्थना करते हैं।

अन्य क्षेत्रों में

मकर संक्रान्ति भारत के अन्य क्षेत्रों में भी धार्मिक उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जाता है। पंजाब में इसे लोढ़ी कहते हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों में नई फसल की कटाई के अवसर पर मनाया जाता है। पुरुष और स्त्रियाँ गाँव के चौक पर उत्सवाग्नि के चारों ओर परम्परागत वेशभूषा में लोकप्रिय नृत्य भांगडा का प्रदर्शन करते हैं। स्त्रियाँ इस अवसर पर अपनी तलहथियों और पाँवों पर आकर्षक आकृतियों में मेहन्दी रचती हैं।

पश्चिम बंगाल में मकर सक्रांति के दिन देश भर के तीर्थ यात्री गंगा सागर द्वीप पर एकत्र होते हैं, जहाँ गंगा बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। एक धार्मिक मेला, जिसे गंगासागर मेला कहते हैं, इस समारोह की महत्वपूर्ण विशेषता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस संगम पर डुबकी लगाने से सारा पाप धुल जाता है।
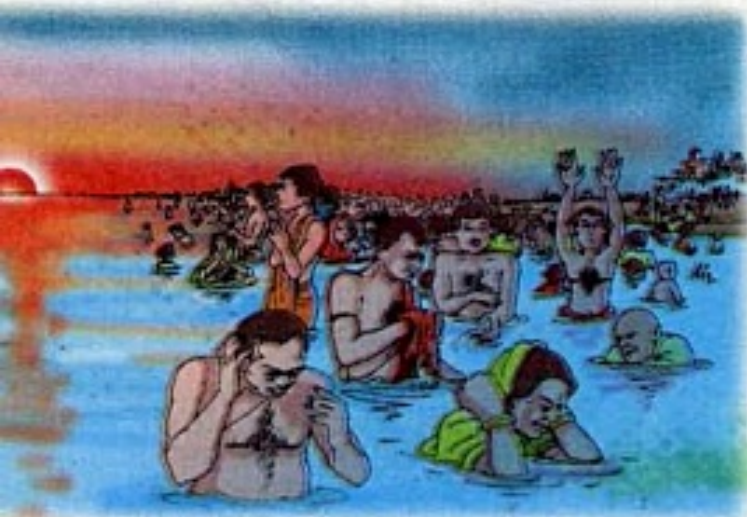
कर्नाटक में भी फसल का त्योहार शान से मनाया जाता है। बैलों और गायों को सुसज्जित कर उनकी शोभा यात्रा निकाली जाती है। नये परिधान में सजे नर-नारी, ईख, सूखा नारियल और भुने चने के साथ एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। पंतगबाजी इस अवसर का लोकप्रिय परम्परागत खेल है।

गुजरात का क्षितिज भी संक्रान्ति के अवसर पर रंगबिरंगे पंतगों से भर जाता है। गुजराती लोग संक्रान्ति को एक शुभ दिवस मानते हैं और इस अवसर पर छात्रों को छात्रवृतियाँ और पुरस्कार बाँटते हैं।

केरल में भगवान अयप्पा की निवास स्थली सबरीमाला की वार्षिक तीर्थयात्रा की अवधि मकर संक्रान्ति के दिन ही समाप्त होती है, जब सुदूर पर्वतों के क्षितिज पर एक दिव्य आभा 'मकर ज्योति' दिखाई पड़ती है।

मकर संक्रान्ति भारत के भिन्न-भिन्न लोगों के लिए भिन्न-भिन्न अर्थ रखती है। किन्तु सदा की भाँति, नानाविध उत्सवों को एक साथ पिरोनेवाला एक सर्वमान्य सूत्र है, जो इस अवसर को अंकित करता है। यदि दिवाली ज्योति का पर्व है तो संक्रान्ति शस्य पर्व है, नई फसल का स्वागत करने तथा समृद्धि व सम्पन्नता के लिए प्रार्थना करने का एक अवसर है।

तमिलनाडु की एक लोककथा

जब तुम तमिलनाडु की बात करते हो तब तुम्हारे मन में क्या विचार आते हैं : कांचीपुरम की कुंचित रेशमी साड़ी, इडली-डोसा, कर्नाटक संगीत, भरतनाट्यम और मंदिर। ईसा के जन्म से भी पहले तमिलनाडु में एक राजा राज्य करता था। आज भारत में प्रयुक्त होनेवाली प्राचीनतम भाषाओं में से एक भाषा तमिल भी है।

तमिलनाडु उत्तर में कर्नाटक और आंध्र प्रदेश से तथा पश्चिम में केरल से घिरा हुआ है। इसके पूरब और दक्षिण में बंगाल की खाड़ी और हिन्द महासागर हैं। दक्षिण का अग्रतम भाग है कन्याकुमारी जहाँ भारत का स्थलपुंज क्रमशः संकुचित होता हुआ प्रतिवेश करती हुई सागर की जलराशि में समा जाता है।

भारत के पूरबी और पश्चिमी घाटों का संगम तमिलनाडु में होता है, और यहाँ के लोकप्रिय पहाड़ी सैरगाह - ऊटी, कोडइकनल, यरकॅड तथा कोटागिरि इसी क्षेत्र में पड़ते हैं।

एक लाख ३० हजार वर्गमील के क्षेत्र में फैला हुआ और छः करोड़ २१ लाख दस हजार की आबादी का राज्य तमिलनाडु भारत का ग्यारहवाँ सबसे बड़ा राज्य है।

इस कहानी में उपयोग किये गये तमिल शब्दों का शब्दावली पृष्ठ ४५ में दिया गया है।

छाछ और बासी भात

मुरुगन और उसकी पत्नी सेल्वी तमिलनाडु के सुदूर दक्षिणी क्षेत्र के एक गाँव पुलियमपट्टी में रहते थे। मुरुगन बहुत गरीब था। उसके पास न तो जमीन थी और न कोई काम जिससे वह गुजारा कर सके। सेल्वी के लिए घर चलाना मुश्किल हो रहा था। एक दिन जब वह बहुत परेशान हो गई तो उसने अपने पति से कहा, ''यदि तुमने शीघ्र कमाना शुरू नहीं किया तो मैं मैके चली जाऊँगी।'' फिर उसने रात के बचे-खुचे पनियल भात को छाना और नमकीन *'नीर मोरु'* में

मिलाकर मजेदार बनाने के लिए उसमें कुछ *पचै मोलगय* डाल दिया। फिर इसे एक डिब्बे में बन्द कर उसने पति को दे दिया।

"अब तुम शहर चले जाओ और कुछ काम तलाश करो। और जब तक कुछ पैसे कमा न लो, वापस न आना। मैंने तुम्हें चावल का आखिरी दाना दे दिया।" सेल्वी ने कहा।

मुरुगन दुखी मन से शहर की ओर पैर घसीटता हुआ चल पड़ा। दिन गर्म था पर हवा में नमी थी। लगभग एक घण्टे के बाद वह इमली के एक विशाल और छायेदार वृक्ष के पास पहुँचा।

"इस *'पुलिया मरम्'* के नीचे थोड़ी देर विश्राम करूँगा," उसने सोचा। "तब दोपहर तक सेल्वी का दिया हुआ *'पळैय सोरु'* खा लूँगा।" उसने आवारा जानवरों से सुरक्षित रखने के लिए *'पळैय सोरु'* की अपनी बहुमूल्य पोटली एक शाखा में लटका दी और वह गहरी नींद में सो गया।

उस *पुलिया मरम्* पर एक ब्रह्मराक्षस रहता था - कहा जाता है कि हरेक विशाल *पुलिया मरम्* पर एक ब्रह्मराक्षस रहता है। उस ब्रह्मराक्षस ने आश्चर्य करते हुए सोचा कि आखिर मुरुगन की पोटली में क्या है, जो उसने इतनी सावधानी से बाँध रखा है। जैसा कि ऐसी सत्ताओं का स्वभाव है, जब तक उसकी उत्सुकता को संतुष्टि नहीं मिली, वह शान्त नहीं बैठ सका। अतः उसने गठरी के निकट जाकर उसे खोला। ऐसा करते समय उसने गहरी सांस ली।

"आह, कैसा स्वादिष्ट सुवास है! इसमें भला कैसा भोजन है? देखें तो! मैंने आज तक ऐसा

सुगंधित भोजन नहीं देखा।" उसने मन ही मन सोचा। तब उसने एक *पचै मोलगय* को दाँत से काटते हुए *सोरु* का एक कौर मुँह में डाला। यह उसे इतना स्वादिष्ट लगा कि वह कौर पर कौर खाता चला गया और उसे पता ही नहीं चला कि सारा *सोरु* कब खत्म हो गया।

तब उसने महसूस किया कि उससे अपराध हो गया। "बेचारा! जब वह नींद से भूखा जागेगा तब भला क्या खायेगा?" ब्रह्मराक्षस ने सोचा। इसलिए उसने *पळैय सोरु* वाली पोटली के कपड़े में कांसे का एक जादुई कटोरा बाँध दिया। "यह *वेंगलाप्पानय* तेरा कल्याण कर देगा।" उसने खर्राटे भरते हुए मुरुगन से बुदबुदाया।

कुछ देर पश्चात जब वह नींद से तरोताजा होकर उठा तो उसे जोरों से भूख लगी हुई थी। उसने बड़ी उत्सुकता से *मोलगय* और *पळैय सोरु* की पोटली उतारी। पर आह! वहाँ खाने के

पर्व और मेले

फसल-लुनाई के अवसर पर मनाया जानेवाला पर्व पोंगल तमिलनाडु के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पर्वों में से एक है। यह जनवरी माह में चार दिनों तक मनाया जाता है। इस अवसर पर प्रत्येक गाँव और शहर में जल्लीकट्टू यानी वृषभ युद्ध का आयोजन किया जाता है।

चितिराय विळा अप्रैल महीने में मदुरै शहर में मनाया जाता है। इस पर्व की विशिष्टता यह है कि इस अवसर पर भगवान सुन्दरेश्वर (शिव) की पांडया की राजकुमारी मीनाक्षी के साथ शादी का अभिनय-प्रदर्शन किया जाता है। यहाँ आयोजित होनेवाले इन सांस्कृतिक पर्वों में चिदम्बरम् और मामल्लपुरम् के नृत्य समारोह भी सम्मिलित हैं। इस पर्व के अवसर पर मामल्लपुरम् या महाबलीपुरम् में देश के सर्वोत्तम नृत्य-कलाकारों का प्रदर्शन देखा जा सकता है। तेरहवीं शताब्दी में समुद्रतट पर पल्लव राजाओं द्वारा निर्मित अखण्डित शिला प्रतिमाओं के समक्ष खुले मंच का निर्माण किया जाता है।

चिदम्बरम् में नृत्य समारोह का आयोजन ब्रह्माण्डीय नृत्य कलाकार नटराज के मंदिर में किया जाता है। मंदिर के स्तम्भों पर तमिलनाडु के शास्त्रीय नृत्य भरतनाट्यम की १०८ नृत्य मुद्राएँ अंकित हैं।

लिए कुछ भी न था। उसके स्थान पर था एक चमकदार *वेंगलप्पानय*। लेकिन उसे नहीं मालूम था कि यह जादुई पात्र है। उसने निराशा और गुस्से में उसे पटक दिया, जिससे घंटी की ध्वनि निकली और एक देवदूत प्रकट हो गया। उसने मुरुगन के सामने एक स्वच्छ ताजे *वाळै इलय* पर विलक्षण भोजन परोस दिया। मुरुगन चकित हो गया। लेकिन वह इतना भूखा था कि सवाल पूछने में उसने समय नष्ट नहीं किया (और उसके सवालों का जवाब देनेवाला भी वहाँ कौन था?) और झटपट खाने लगा।

खाना समाप्त होने के बाद चुटकी में सब कुछ साफ हो गया और *पानय* वहाँ पूर्ववत ऐसे पड़ा था मानों कुछ हुआ ही नहीं। मुरुगन ने पूरी तरह तृप्त होकर खाना खाया, क्योंकि ऐसा भोजन उसे बहुत दिनों से नहीं मिला था। उसने जल्दी कटोरा उठाया ताके वह अदृश्य न हो जाये और वापस घर की ओर चल पड़ा।

सेल्वी को उसे देखकर बिल्कुल खुशी नहीं हुई। वह जानती थी कि एक दिन में वह खजाना

बटोर कर कहाँ से ले आयेगा; इसलिए वह उस पर चिल्लाने लगी। लेकिन जैसे ही उसने मुँह खोला कि मुरुगन ने उसे जोर से डाँटा, *''वाय मूडु।''* सेल्वी का मुँह खुला का खुला ही रह गया। फिर उसने *वेंगलप्पानय* को खटखटाया और देवदूत को भोजन देने के लिए आह्वान किया। देवदूत तुरन्त प्रकट हो गया। दो हरे-हरे ताजे *वाळै इलय* बिछा दिये गये और दोनों दम्पति के लिए स्वादिष्ट भोजन परोस दिया गया।

तब मुरुगन ने अपनी पत्नी को पूरी कथा सुनाते हुए कहा कि कैसे उसके दिये हुए *पळैय सोरु* के स्थान पर *पानय* रख दिया गया। उन लोगों ने निश्चय किया कि वे लोग हर रोज गाँव के सभी गरीबों को खाना खिलायेंगे क्योंकि यह देवों का दिया हुआ उपहार है। ''हम सभी गाँववालों को *विरुंदु* देंगे।'' सेल्वी ने कहा।

दूसरे दिन मुरुगन और सेल्वी दोनों ने घर-घर जाकर गाँव के सभी लोगों को भोजन के लिए निमंत्रित किया। गाँव के सभी लोगों को इस दम्पति का फटेहाल मालूम था फिर भी वे स्वादिष्ट भोजन के आनन्द की आशा की अपेक्षा उत्सुकता के कारण वहाँ पहुँच गये। उनके आश्चर्य का अनुमान करो जब सबने मुरुगन की झोंपड़ी को सजा सजाया और भोज के लिए तैयार पाया। मुरुगन और सेल्वी दोनों ने अपने घर के आगे खड़े हो हाथ जोड़कर सबका स्वागत किया : *''वांगा ! वांगा !!''* अलंकृत जैसे वेश में दिखाई पड़नेवाले देवदूतगण पंक्तियों में *वाळै इलय* बिछाने और चमकीले स्टेनलेस स्टील गिलासों में जल भरने में व्यस्त थे।

हस्तशिल्प

तमिलनाडु अपनी रेशम की साड़ी के लिए सारे विश्व में विख्यात है। ये साड़ियाँ शुद्ध शहतूत की रेशम से कांचीपुरम में बुनी जाती हैं। चटकीले रंग की इन साड़ियों को बुनावट, चमक, टिकाऊपन तथा परिपूर्णता के लिए वांछनीय ख्याति प्राप्त है। इन्हें जरी की कसीदाकारी से सजाया जाता है। कांचीपुरम का रेशम उद्योग चार सौ वर्षों से भी अधिक पुराना माना जाता है।

अतिथियों के बैठते ही उन्हें गरमागरम स्वादिष्ट भोजन परोसा गया : चटपटा *मसाला बड़ैय*, *अप्पलम*, स्वादिष्ट *पायसम्*, गरमागरम *सांभर*, चार प्रकार की सब्जियाँ, *अवियल*...।

गाँव भर में यह भोज चर्चा का विषय बन गया।

पुलियमपट्टी का धनी महाजन भोज में नहीं आया था और उत्सुकता तथा द्वेष का भाव उसे परेशान कर रहा था। एक दिन वह मुरुगन के घर गया और उससे सारा भेद ले लिया। फिर उसने अपने लिए वैसा ही एक पानय प्राप्त करने का निश्चय किया।

उसने अपनी पत्नी से महँगा भोजन तैयार करवाकर एक अनेक डिब्बेवाले बड़े टिफिन कैरियर में रखवाया और उस वृक्ष की ओर चल पड़ा जहाँ ब्रह्मराक्षस रहता था।

शीघ्र ही वह उंघने लगा। ''वह बेवकूफ

मंदिर

तमिलनाडु अपने मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर या बड़ा मंदिर अपनी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। इसका निर्माण ९८५ ईसवी से १०१३ ईसवी के बीच राजा चोला प्रथम द्वारा किया गया था। विमानम (मंदिर का बुर्ज) ग्रेनाइट की एक अखण्डित शिला से तराशा गया है और इस प्रकार से रखा गया है कि इसकी छाया जमीन पर कभी नहीं पड़ती।

मदुरै का मीनाक्षी-सुन्दरेश्वरर मंदिर पर्यटकों के लिए दूसरा आकर्षण-केन्द्र है। यहाँ भगवती मीनाक्षी और भगवान शिव की पूजा होती है।

कांचीपुरम के एकमबरेश्वरर मंदिर में पाँच तत्वों में से एक तत्व-पृथ्वी के रूप में शिव भगवान की पूजा होती है।

राज्य के अन्य मंदिर हैं - श्रीरंगम में श्रीरंगनाथर मंदिर; कुंभकोनम, रामेश्वरम तथा चिदम्बरम् के साथ-साथ इनके परिवेशीय मंदिर।

ब्रह्मराक्षस कहाँ है? वह जल्दी क्यों नहीं आता?'' वह जोर से चिल्लाकर बोला। ब्रह्मराक्षस ने सुन लिया और उसने उसे अच्छा पाठ पढ़ाने का निश्चय किया। शीघ्र ही महाजन को नींद आ गई। ब्रह्मराक्षस ने टिफ्फिन कैरियर हटाकर उसके स्थान पर बेंत की एक टोकरी रख दी। ''यह *मूंगिल कूडै* तुम्हारी खबर लेगा।'' उसने सोचा।

जब महाजन की नींद खुली तो उसने बड़ी आशा भरी नजर से चारों ओर देखा। टोकरी देखकर उसे थोड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन फिर सोचा कि शायद यह मुरुगन के *पानय* से अच्छा हो, क्योंकि वह ब्रह्मराक्षस के लिए इतना महँगा खाना लाया था। वह इतराता हुआ घर पहुँचा।

अगले दिन उसने अपने सभी मित्रों को भोज के लिए आमंत्रित किया। जब सब एकत्र हो गये तब बड़े आत्मविश्वास के साथ उसने टोकरी को

शब्दावली

नीर मोरु	: छाछ
पच्चै मोलगय	: हरी मिर्च
पुलिया मरम्	: इमली का पेड़
पळैया सोरु	: बचा हुआ भात
वेंगलप्पानय	: कांस का बर्तन
पानय	: पात्र, बर्तन
वाळै इलय	: केले का पत्ता
वाय मूडु	: चुप रहो
विरुन्दु	: भोज
वांगा वांगा	: स्वागत है।
मूंगिल कूडै	: बांस की टोकरी
मोटई अडिचुडुचे	: उसने मेरा सिर मुण्डन कर दिया।

(तमिल में इसका अर्थ अपमानित कर पैसे लूट लेना भी है।)

अतिथियों का भोजन परोसने का आदेश दिया। लेकिन टोकरी से चार विशालकाय व्यक्तियों को निकलते देखकर उसे आश्चर्य हुआ। उनकी मूछें और पुट्ठे भयावने थे। उन्होंने महाजन और उसके अतिथियों के सिर मुड़ दिये और उन्हें भूखे ही घर भेज दिये। *''अय्यो ! मोटाई अडिचुडुचे !''* बेचारा महाजन रोने धोने लगा।

यह भोज भी गाँव भर में चर्चा का विषय बन गया और महाजन को इस अपमान से बचने के लिए लम्बी तीर्थ यात्रा पर जाने के लिए बाध्य होना पड़ा।

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

एक और गणतंत्र दिवस - तथ्यत: इक्यावनवाँ, २६ जनवरी २००२ को पड़ता है। यह उस दिन का स्मारक है जब भारतवर्ष को एक स्वतंत्र प्रभुसत्ता सम्पन्न समाजवादी गणतंत्र घोषित किया गया। विदेशी शासकों से मुक्ति के लिए वर्षों तक संघर्ष करने के बाद यह संभव हो सका। इस महीने की प्रश्नावली भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से आजादी की लड़ाई की याद दिलाती है। जिन्होंने जनवरी से अप्रैल तक हमारे लेख ''बीसवीं शताब्दी में भारत'' का अनुगमन किया है, उन्हें अधिकांश उत्तर कंठाग्र होंगे।

१. भारतीय संघर्ष (द इंडियन स्ट्रगल) का लेखक कौन है?
२. किसने सबसे पहले 'सत्याग्रह' शब्द का प्रयोग किया?
३. कहाँ और कब पंडित जवाहरलाल नेहरू और गाँधी जी पहली बार मिले।
४. तीन राष्ट्रीय नेताओं को सभी लोग लाल, बाल, पाल के नाम से पुकारते थे। वे तीनों कौन-कौन थे?
५. बंगाल को कब बंगाल और पूरबी बंगाल में बाँट दिया गया?
६. ईस्ट इंडिया कम्पनी ने ब्रिटिश सरकार को कब सत्ता सौंपी?
७. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने कहाँ और कब भारत की स्वंतत्रता का प्रस्ताव पारित किया?
८. साइमन कमीशन भारत कब आया था?
९. अन्तरिम सरकार कब बनी?
१०. ''आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।'' यह प्रसिद्ध कथन किसका है?

(उत्तर अगले महीने)

दिसम्बर प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. ११ मई २०००/ बच्चे का नाम आस्था दिया गया।
२. कंचनजंघा - ८, ५९८ मी.२०,२०८ फु.।
३. सिन्धु, झेलम, चनाब, रावी, शतलज।
४. उत्तरांचल - देहरादून/ छत्तीसगढ़ - रायपुर/ झारखंड-राँची।
५. तमीलनाडु - श्रीमती जानकी रामचन्द्रन और सुश्री जे. जयललिता।

भारत की गाथा

एक महान सभ्यता की झाँकियाँ : युगों-युगों से सत्य के लिए इसकी खोज

२४. कालिदास का सम्मोहक आकर्षण

''ग्रैंड पा,'' संदीप ने स्कूल से लौटते ही उत्तेजित स्वर में पुकारा, ''हम लोग अपने वार्षिक समारोह के अवसर पर कालिदास के एक नाटक का मंचन कर रहे हैं। हमें प्रेक्षागृह में कल बुलाया गया है, हालांकि कल रविवार है। हमारे अध्यापक हमें पार्ट देंगे।''

''क्या 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' का मंचन कर रहे हो?'' प्रोफेसर देवनाथ ने पूछा।

''बिलकुल ठीक ग्रैंड पा, लेकिन आपने कैसे अनुमान किया।''

''यह कोई बड़ी बात नहीं है मेरे बच्चे, क्योंकि यह कालिदास का सर्वाधिक लोकप्रिय नाटक है। अन्य दो - 'विक्रमोर्वशीयम' और 'मालविकागनिमित्र' नाटकों को मंचित करना सरल नहीं है और संस्कृत के अतिरिक्त अन्य किसी भाषा में मंचन करने पर उनका सौन्दर्य जाता रहेगा। क्या तुम लोग, संयोग से, इसे मूल संस्कृत में कर रहे हो?''

''ओह नहीं!''

''क्यों? संस्कृत में मंचन करने से इतना घबराते क्यों हो?''

''यह बहुत कठिन है!''

''यह पुराना विचार है मेरे बच्चे। यह कठिन इसलिए लगता है कि अध्यापक इसे पढ़ाने के

- विश्वावसु -

लिए कठिन प्रणाली का प्रयोग करते हैं। अब नई प्रणाली प्रचलन में है। संस्कृत का आनन्द अनुपम है। लेकिन यह विषय भिन्न है। तुम किसकी भूमिका कर रहे हो?''

''मुझे नहीं मालूम ग्रैंड पा। यह कल ही निश्चय किया जायेगा। क्या आप संक्षेप में कहानी बता सकते हैं? इससे हमें भूमिका निश्चित करने में शायद कुछ मदद मिल जाये।''

''भूमिका निश्चित करने में क्या है? नाटक में एक विदूषक होगा और उसकी भूमिका तुम्हारे लिए निश्चित कर दी गई होगी!'' चमेली बीच में बात काटती हुई बोली। वह अभी-अभी स्कूल से लौटी थी।

''लगता है तुम कहानी जानती हो! तब तो ठीक है। अब तुम्हें ग्रैंडपा से सुनने की आवश्यकता नहीं है। मेहरबानी करके जाओ यहाँ से। मुझे अकेले ही उनसे कहानी सुनने दो।'' संदीप अपनी छोटी बहन पर झुंझलाता हुआ बोला।

''मेरे विचार से तुम दोनों जाओ। अपने कपड़े बदलो, नाश्ता कर लो और फिर आ जाओ। तुम्हारे दादा जी से मिलने कुछ उबाऊ व्यक्ति आये थे और वे उनसे बात करके थक गये होंगे। उन्हें आराम करने दो।'' उनकी माँ जयश्री ने हस्तक्षेप किया।

''मैं प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूँ।'' प्रोफेसर ने कहा।

''दोनों बच्चे बस्ते के साथ भाग गये लेकिन आधे घण्टे में ही वापस लौट आये।

प्रोफेसर देवनाथने आँखें बन्दकर, तब तक, कहानी पर चित्त एकाग्र किया।

''क्या आप को सचमुच विश्राम की जरूरत नहीं है?'' जयश्री ने पूछा।

''कोई बात नहीं।'' सहृदय वयोवृद्ध ने प्रश्न को टालते हुए कहा, ''उनसे बात करना अपने आप में विश्राम होना चाहिये।''

और वे अपना आख्यान सुनाते रहे:

कहानी बड़े मनोरंजक स्वर के साथ आरंभ होती है। हस्तिनापुर के राजा दुष्यन्त आखेट पर हैं और एक हिरण का पीछा करते-करते कण्व ऋषि के आश्रम के निकट पहुँच जाते हैं। तभी आश्रम में संयोगवश विश्वामित्र और मेनका की सुन्दर पुत्री और कण्व की दत्तक शकुन्तला को एक भौंरा परेशान करता है। उसकी एक हाजिरजवाब सहेली आश्चर्य प्रकट करती है कि कैसे कोई भी राजा दुष्यन्त के राज्य में किसी युवती को तंग कर सकता है।

तभी युवती को संकट से उबारने के लिए दुष्यन्त स्वयं वहाँ उपस्थित हो जाते हैं।

ऋषि कण्व आश्रम में नहीं हैं। इसलिए राजकीय अतिथि का ध्यान रखना पुत्री का कर्तव्य है। राजा विश्राम के लिए कुछ दिनों तक आश्रम में रुक जाते हैं। और वन्य पशुओं तथा उस क्षेत्र के दानवों को भगाने में व्यस्त रहते हैं। शीघ्र ही शकुन्तला और दुष्यन्त एक दूसरे को अपने हृदय में बसा लेते हैं और गंधर्व विवाह कर लेते हैं।

राजा शकुन्तला को अपनी बहुमूल्य मुद्रिका उपहार में देकर अपनी राजधानी लौट जाते हैं क्योंकि वे समझते हैं कि कण्व की अनुपस्थिति में शकुन्तला को उन्हें अपने साथ नहीं ले जाना चाहिये।

एक दिन जब शकुन्तला दुष्यन्त के चिन्तन में खोई रहती है तभी क्रोधी ऋषि दुर्वासा वहाँ पहुँच जाते हैं। शकुन्तला का ध्यान उनकी ओर न जाने के कारण वह ऋषि का यथोचित स्वागत नहीं कर पाती और दुर्वासा उसे शाप दे देते हैं - ''जिसकी अनुरक्ति में ध्यान मग्न हो अपना कर्तव्य भूल गई हो, वह प्रेमी भी तुम्हें विस्मृत कर देगा।''

शकुन्तला ऋषि का शाप स्वंय नहीं सुन पाती परन्तु उसकी एक सहेली सुन लेती है। उसकी प्रार्थना से द्रवित होकर तब ऋषि शाप को सुधारते हुए कहते हैं कि इसका प्रभाव एक दिन समाप्त हो जायेगा।

आश्रम में लौट आने पर ऋषि कण्व यह जान कर प्रसन्न होते हैं कि उनकी पुत्री ने राजा दुष्यन्त को अपना पति चुना है। शकुन्तला शीघ्र ही माँ बनने जा रही है। ऋषि उसे पति के घर भेज देते हैं।

आह ! शाप के प्रभाव के कारण राजा उसे

पहचानने से इनकार कर देते हैं और नदी पार करते हुए जल प्रवाह से क्रीड़ा करते समय उसकी मुद्रिका भी कहीं खो जाती है।

शकुन्तला के मान मर्दन की पीड़ा असहनीय हो जाती है। उसकी माँ अप्सरा मेनका उसका मार्गदर्शन करती है। वन में शकुन्तला एक पुत्र को जन्म देती है।

एक दिन एक धीवर को एक मछली के पेट से एक मुद्रिका मिलती है। उसे राजा के पास भेजा जाता है। मुद्रिका को देखते ही राजा को शकुन्तला की याद आ जाती है। वह पश्चाताप करता है। किन्तु शकुन्तला कहाँ है? उसके प्रति किये गये अन्याय के बारे में सोच-सोच कर वह व्यथित हो उठता है और रात-दिन वेदना और विषाद से घिरा रहता है।

दुष्यंत एक दिन ऋषि कश्यप के आश्रम में भ्रमण के समय सिंह शावकों से साथ क्रीड़ा करते हुए एक बालक को देख कर मुग्ध हो जाते हैं। वह बालक उन्हीं का पुत्र है। उसी के माध्यम से वे शकुन्तला से मिलते हैं जिसे वे कुछ दिनों के लिए भूल चुके थे। उन दोनों का सुखद पुनर्मिलन हो जाता है।

उनका पुत्र भरत एक महान सम्राट बन जाता है जिसके नाम पर हमारा देश भारतवर्ष के रूप में ख्यात हुआ।

ग्रैंड पा देवनाथ ने कहानी का उपसंहार देते हुए कहा, "क्या तुम जानते हो कि एक महान जर्मन कवि का क्या कथन है? वह इस प्रकार है:

यदि यौवन के पुष्पों का लेना है आनन्द,
और प्रौढ़ावस्था का चाहते हो चखना फल।
और यदि है कांक्षा कि हो हमारे पास कुछ मोहक;
कुछ ऐसा जिसमें हो सम्मोहक आकर्षण।
चाहते हो बांध देना भूमा और भूमि को
एक प्रणय-डोर में, मात्र एक शब्द से;
तब पढ़ो शकुन्तला; कहता हूँ मैं,
हो जायेंगी ये कामनाएँ पूर्ण संतृप्त।

चमत्कारी वीणा

बहुत पहले की बात है। एक गाँव में एक संगीतकार था। उसके तीन बेटे थे। सब मिलकर संगीत सभाएँ चलाते थे और अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे। कुछ समय बाद संगीतकार बीमार पड़ गया अैर फलस्वरूप उसकी उँगलियाँ बेकार हो गयीं। साथ ही वह बोल भी नहीं पाता था। उस गाँव के वैद्य ने उसकी जाँच करने के बाद कह दिया, ''यह कोई मामूली बीमारी नहीं हैं। कोई प्रसिद्ध राजवैद्य ही इसकी चिकित्सा कर सकता है। मुझ जैसे सामान्य वैद्य से कुछ नहीं हो सकना। राजवैद्य से चिकित्सा करानी हो, उसकी सेवाएँ पानी हो तो अपने देश के मूर्ख महाराज से इसके लिए स्वीकृति लेनी होगी। उनकी स्वीकृति और प्रशंसा पाने पर ही राजवैद्य की सेवाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। सबका यही कहना है कि पत्थर को भी मना सकते हैं, तृप्त कर सकते हैं, पर राजा को मनाना, उन्हें संतृप्त करना असंभव है। मुझे नहीं लगता कि इस रोग की चिकित्सा हो सकती है और तुम्हारे पिता अच्छे हो सकते हैं। फिर भी कोशिश करो।'' अपनी राय देकर वह वहाँ से चला गया।

तीन बेटों में से बड़े बेटे ने अपने भाइयों से कहा, ''मानता हूँ कि राजा महामूर्ख है, परंतु मुझे विश्वास है कि मैं अपने वीणा-वादन से राजा को संतृप्त कर सकता हूँ और राजवैद्य की सेवाएँ पाने की अनुमति प्राप्त कर सकता हूँ। पिताजी की तबीयत ठीक हो जाए, इससे बढ़कर हमें और क्या चाहिए।''

वह राजा से मिला और बोला, ''प्रभु, वीणा-वादन में मैं निष्णात हूँ। प्रतिभावान हूँ। अवश्य ही आपको संतृप्त कर सकता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि मैं अगर इस प्रदर्शन में सफल रहा तो राजवैद्य से मेरे पिताजी की चिकित्सा करा दीजिये !''

राजा ने हँसते हुए कहा, ''मैं ही नहीं बल्कि मेरे सेवक भी वीणा बजा लेते हैं। अपनी इच्छा पूरी ही करनी हो तो एक काम करो। सभी लोगों

- रीता राठौर -
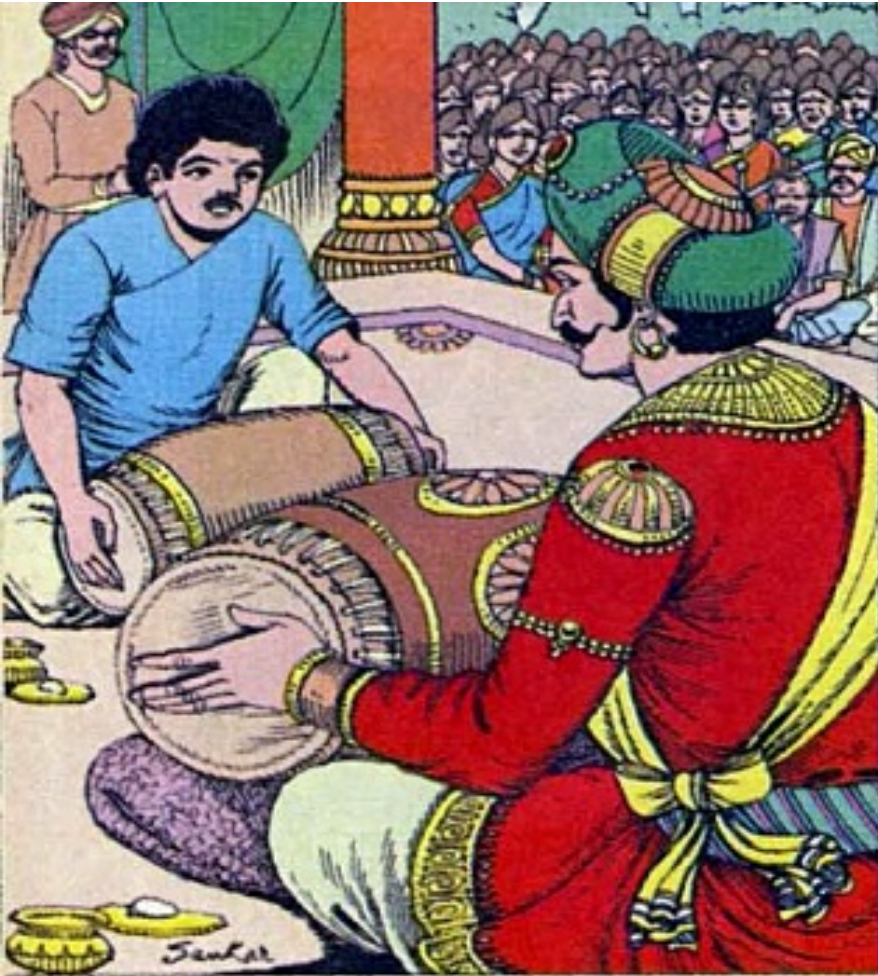
का यह एकाभिप्राय है कि वीणा वादन में मेरी बराबरी कोई नहीं कर सकता। इसलिए बाजी लगाओ। मुझे जीत जाओगे तो तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी। अगर मैं जीत गया तो तुम्हें कोड़े से पचीस बार पिटवाऊँगा। इस स्पर्धा की निर्णायक जनता होगी''।

संगीतकार के बड़े बेटे ने यह शर्त मान ली। इसके दूसरे ही दिन जनता के सम्मुख यह स्पर्धा आयोजित हुई। इस स्पर्धा में यद्यपि बड़े बेटे ने राजा से अधिकाधिक नैपुण्य दिखाया, फिर भी जनता ने राजा को ही विजयी घोषित किया, क्योंकि वे राजा से बेहद डरते थे। फलस्वरूप बड़े बेटे को शर्त के अनुसार कोड़े से पचीस बार पिटवाया गया। अपने बड़े भाई की इस बुरी हालत को देखकर दोनों छोटे भाई हताश हो गये। जो हुआ, उसकी पूरी जानकारी प्राप्त करने के बाद दूसरे बेटे ने कहा, ''आज के दिनों में बीणा वादन सर्वसामान्य विषय हो गया। इसीलिए राजा तुम्हें हरा सका। किन्तु मृदंग की बात अलग है। उसे चंद लोग ही दक्षता के साथ बजा सकते हैं। मृदंग बजाने में मैं प्रवीण हूँ। मृदंग बजाकर मैं राजा की प्रशंसा पाऊँगा और राजवैद्य से पिताजी की चिकित्सा कराऊँगा।''

वह भी राजा से मिला और कहा, ''मृदंग वादन में मेरी बराबरी का कोई है ही नहीं। चाहें तो मेरी परीक्षा कर लीजिए। मैं सफल हुआ तो मेरे पिताजी की चिकित्सा राजवैद्य से करा दीजिये।''

राजा ने उसे गौर से देखा और कहा, ''लगता है, तुम वीणा वादन में पराजित व्यक्ति के सगे भाई हो। शायद तुम्हें नहीं मालूम कि मैं संगीत सम्राट हूँ। मेरा सामना करने की अगर तुमने जुर्रत की तो तुम्हारे भाई की जो हालत हुई, वही तुम्हारी भी होगी। तुम्हें यह शर्त मंजूर हो तो तैयार हो जाओ! मैं इस स्पर्धा में तुम्हारे साथ भाग लूँगा।''

दूसरे ही दिन राजा और संगीतकार के दूसरे बेटे के बीच स्पर्धा चली। राजा का मृदंग-वादन जनता को बिल्कुल पसंद नहीं आया। वह बिल्कुल अटपटा, असंतुलित और असंगत था। लगता था कि राजा मृदंग वादन के मूल सिद्धांतों से भी अपरिचित हैं। पर दूसरे बेटे ने खुलकर अपनी प्रतिभा दिखायी। सुनने में वह कितना ही मधुर लगता था। किन्तु क्या लाभ? राजा से डरती जनता ने पुनः राजा को ही विजयी घोषित किया। परिणामस्वरूप दूसरे बेटे को भी कोड़े से पिटवाया गया।

दूसरा भाई भी कोड़े की मार खाकर जब बुरी

हालत में घर लौटा तब तीसरा भाई एकदम नाराज़ हो उठा और कहने लगा, ''संगीत विद्वान के दो बेटों को राजा ने बेवकूफ़ और निकम्मा बनाया, जनता के सामने उनकी बेइज्ज़ती की। मैं ऐसे मूर्ख राजा को पाठ सिखाकर ही दम लूँगा। अगर मैं ऐसा नहीं कर सका तो संगीत विद्वान का बेटा ही नहीं।'' यह कहकर वह वीणा, मृदंग व शहनाई लेकर राजधानी की ओर निकल पडा।

राजधानी पहुँचने के बाद वह एक एकांत स्थल में बैठ गया और तीनों वाद्यों को बजाने लगा। इसी काम पर उसने अपना ध्यान केंद्रित किया। आम जनता बड़ी ही उत्सुकता के साथ उसके नैपुण्य को देखती रही। तीन दिनों तक लगातार वीणा के तारों पर उँगलियाँ चलाते रहने के कारण उसकी उँगलियों से रक्त बहने लगा। इसकी खबर राजा तक पहुँची। वह तुरंत मंत्रियों सहित यह दृश्य देखने निकल पड़ा। राजा को देखते ही तीसरे ने उठकर नमस्कार किया। राजा ने उससे पूछा, ''तुम कौन हो? यहाँ क्यों आये?''

तीसरे बेटे ने विनयपूर्वक कहा, ''प्रभु, पर्वतीय अंचल में स्थित भैरव नामक गाँव का हूँ। मेरी ही उम्र का एक बालक कहीं से मेरे गाँव में आता था और मेरे साथ खेलता था। एक दिन ताड़ के फलों के कच्चे गुदे को खाने की उसकी इच्छा हुई। मैं उन्हें लाने तलवार लेकर निकला। मेरे साथ-साथ वह भी आया। वे गर्मी के दिन थे। बड़ी धूप थी। गाँव से बाहर आने के बाद उस गर्मी से बचने के लिए वह स्नान करने तालाब में कूद पड़ा। उसने डुबकी लगायी, पर बहुत देर तक वह बाहर ही नहीं आया। मैं डर गया। मैंने अपनी तलवार कमर

में बांध ली और तालाब में कूद पडा। बड़ी गहराई तक गया। वहाँ पहुँचने पर देखा कि एक विचित्र सर्प उसे निगलने जा रहा है। एक भी पल की देरी किये बिना मैंने तलवार से उस सर्प के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और अपने मित्र की रक्षा की। उसने कृतज्ञता जतायी और अपने घर आने की जिद की। उसके घर तक पहुँचने के लिए मैं पहाड़ों व जंगलों से होता हुआ गया। आख़िर वह मुझे पहाड़ के कोने में ले गया। उस पहाड़ी कोने में एक गुफा थी। मैंने उस गुफ़ा में देखा कि अपने सफ़ेद बालों को अपने कंधों पर बिखराये एक जादूगरनी पत्थर पर कुछ घिस रही है। उसकी आँखें दीपों की तरह जगमगा रही हैं। चेहरा बड़ा ही विकृत है। मेरा मित्र उस जादूगरनी के पास गया। उसे देखते ही जादूगरनी ने उसे गले लगा लिया और चूमती रही। ''कहाँ चले गये थे बेटे ?

आने में बड़ी देर कर दी। तुम्हें बहुत पसंद है न पहाड़ी छिपकलियों की तरकारी! देखो, मैंने वह भी बनाई।'' उस बालक ने मेरा परिचय कराते हुए अपनी माँ से कहा, ''माँ, यह मेरा जिगरी दोस्त है। इसी के कारण आज मैं बाल-बाल बच गया।'' फिर जो भी हुआ, सब कुछ अपनी माँ को बताया।

''जादूगरनी ने आवेश में झूलती हुई कोई लेपन अपने हाथ में लिया। दीवार पर उसे मला और ऊँचे स्वर में मंत्र पढ़ने लगी। जिस दीवार पर लेपन मला गया था, वह दीवार दर्पण के रूप में परिवर्तित हो गयी। उस दर्पण में उसने उस तालाब को देखा, जिसमें उसका बेटा डूब गया था; उस सर्प को भी देखा, जो वहाँ मरा पड़ा था। उस दृश्य को देखते ही वह आपे से बाहर हो गयी और फिर से उसने कोई मंत्र गुनगुनाया। मैंने देखा कि तालाब में पड़ा वह मृत सर्प अब यहाँ पड़ा है। उसे देखते ही जादूगरनी खुशी से फूल उठी और मेरी पीठ को थपथपाते हुए उसने कहा, ''शाबाश बेटे, शाबाश! तुमने सर्प को नहीं, मेरी कट्टर दुश्मन एक जादूगरनी को मार डाला। मैंने उसे मार डालने के कितने ही प्रयत्न किये, पर मैं कामयाब नहीं हो पायी। इतने लंबे अर्से के बाद तुमने उसे मार डाला और साथ ही मेरे बेटे को भी बचा लिया। भेंट के रूप में मैं तुम्हें यह चमत्कारी वीणा, मृदंग व शहनाई दे रही हूँ। इस चमत्कारी वीणा को अच्छी तरह बजा सकोगे तो उसकी महिमा से दो युवक प्रकट होंगे और वे मृदंग व शहनाई बजाकर सबको आश्चर्य में डुबो देंगे।

''उस जादूगरनी की दी हुई वीणा को लगातार तीन दिनों से झंकृत कर रहा हूँ, पर आज तक वे दोनों युवक प्रकट नहीं हुए। मुझे लगता है कि उस जादूगरनी ने मुझे धोखा दिया।''

राजा ने उसकी बातें सुनने के बाद ज़ोर से हँसकर कहा, ''अरे पगले, तुम्हारा यह मानना ग़लत है कि जादूगरनी ने तुम्हें धोखा दिया। याद है, उसने तुमसे क्या कहा था? उसने कहा था कि तुम वीणा अच्छी तरह से बजाओगे तो उसकी महिमा से दो युवक प्रकट होंगे। तुम्हें वीणा ठीक तरह से बजाना नहीं आता उल्टे उस जादूगरनी पर आरोप लगा रहे हो। मैं अब वीणा स्वयं बजाऊँगा और फिर देखना कि वे दो युवक कैसे प्रकट होंगे और कितनी अच्छी तरह से मृदंग एवं शहनाई बजायेंगे।'' कहकर राजा ने वीणा अपने हाथों में ली और उसकी तंत्रियों को झंकृत करने लगा।

राजा वीणा बजाते-बजाते थक गया, पर वे

दो यथाकथित युवक नहीं आये।

राजा ऊब गया और कहने लगा, "मैं संगीत सम्राट हूँ, फिर भी कोई महिमा काम नहीं कर रही है। यह वीणा कोई असाधारण वीणा लग रही है। संगीत में मुझसे भी बड़ा प्रवीण ही इसपर वादन कर सकता है। दशहरा-उत्सव के अवसर पर स्पर्धा की योजना बनाऊँगा और उसमें इस वीणा को झंकृत करके उन दो युवकों को प्रत्यक्ष कराने में जो सफल होगा, उसे अनमोल भेंट भी दूँगा।" यों कहते हुए वह उन वाद्यों को अपने साथ ले गया। दूसरे ही दिन राजा ने इसकी घोषणा करा दी।

थोड़े दिनों के बाद दशहरा-उत्सव के दिन आ ही गये। आखिरी दिन राजा ने वीणा की स्पर्धा रखी। बहुत से वीणा वादकों ने प्रयास किये, पर वे दो व्यक्ति प्रत्यक्ष नहीं हुए। आखिर संगीत विद्वान का तीसरा बेटा मंच पर आसीन राजा को प्रणाम करके बोला, "राजन्, जिस दिन आपने इस स्पर्धा की घोषणा की, उस दिन से मैंने एक विद्वान से वीणा वादन की शिक्षा पायी। मैं समझता हूँ कि मैं इस योग्य हो गया हूँ कि यह वीणा सक्षम रूप से बजा सकूँ। अगर आप अनुमति देंगे तो मैं प्रयत्न करूँगा।"

राजा ने विकट हँसी हँसकर कहा, "हाँ, हाँ, क्यों नहीं! प्रयत्न करो!" उसकी बातों में व्यंग्य भरा हुआ था।

तीसरे ने वीणा के सामने अपना आसन जमाया और अपने इष्ट देव की प्रार्थना की। फिर वीणा के तारों को झंकृत करना शुरू किया। थोड़ी ही देर में संगीतकार का पहला और दूसरा बेटा बहुरूपिये बनकर विचित्र वस्त्र धारण किये वहाँ आये और मृदंग व शहनाई के सामने बैठ गये। वे दोनों बड़ी ही दक्षता के साथ उन वाद्यों को बजाने लगे। वहाँ उपस्थित जनता हर्षातिरेक में तालियाँ बजाने लगी। वह संगीत सभा सुनने व देखने में बड़ी ही रमणीय व नयनाभिराम व कर्णप्रिय लग रही थी। प्रजा तन्मय होकर आँखें बंद करके उस गान-माधुर्य में खो गयी। जब उन्होंने आँखें खोलकर देखा, तब वे दोनों गायब थे और तीसरा अकेले ही वीणा के सामने विराजमान था।

घोषणा के अनुसार राजा ने उसका भव्य स्वागत किया और उसके पिता की चिकित्सा के लिए राजवैद्य की भी व्यवस्था की।
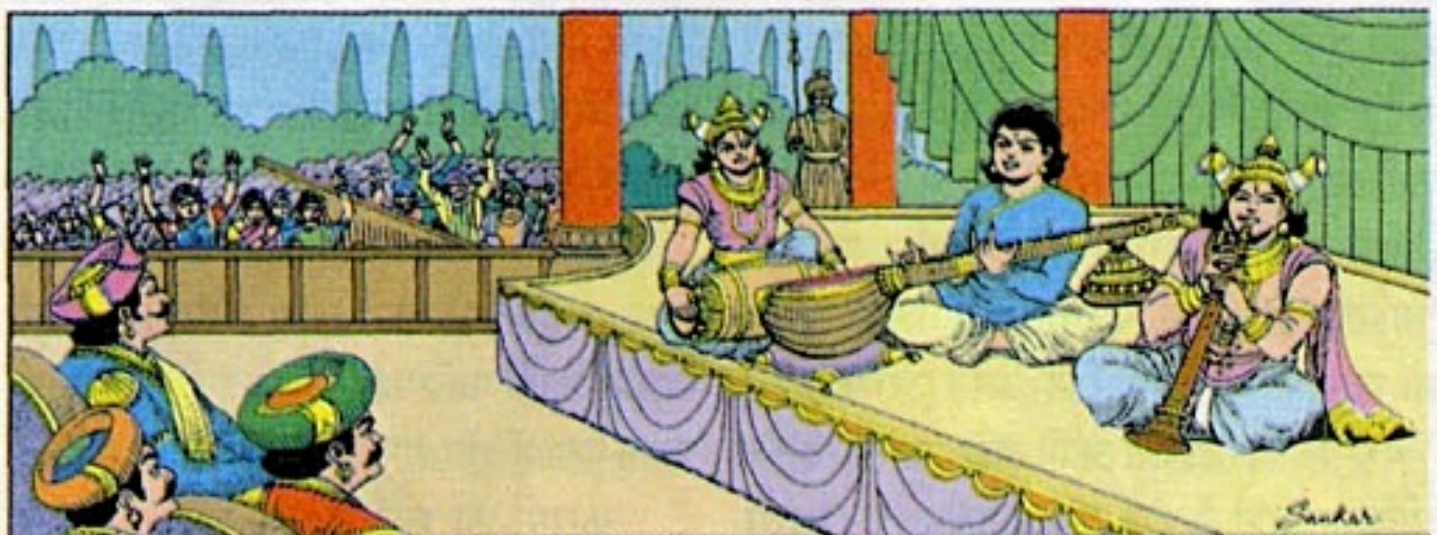
शांता का उपाय

नरेंद्र एक सुन्दर युवक था। उसकी बड़ी इच्छा थी कि सब उसे महान मानें और उसकी भरपूर प्रशंसा करें। इसके लिए उसने पर्याप्त धन भी कमाया। पर ऐसे धनाढ्य कितने ही थे। बस, उनमें से वह भी एक था। इसलिए वह न ही महान माना गया और न ही उस पर प्रशंसा की वर्षा बरसायी गयी।

उसने सोचा कि साहस भरा कोई ऐसा कार्य करें जिससे सब उसकी प्रशंसा करें। पर कितने ही साहसी पहले से ही ऐसे थे, जिन्होंने उससे भी बड़े-बड़े साहसपूर्ण कार्य किये थे। नरेंद्र को सूझ नहीं रहा था कि वह क्या करे!

शांता नरेंद्र की साली थी। वह नरेंद्र को बहुत चाहती थी। नरेंद्र की विचार-पद्धति से परिचित हो जाने के बाद एक दिन उसने उससे कहा, ''बड़प्पन या महानता अपने आप आते हैं। इनके पीछे लग जाने से कोई फ़ायदा नहीं होता। मुझसे विवाह कर लो। मैं तुम्हें महान बना दूँगी।''

नरेंद्र हँसकर व्यंग्य-भरे स्वर में बोला, ''अच्छा, ऐसी बात है! देखो शांता, मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ। तुमसे शादी भी करना चाहता हूँ। तुम्हारा दावा है कि तुम मुझे महान बना सकती हो। तो यह काम शादी करने के पहले ही कर दिखा दो। ऐसा हो जाए तो हमारी शादी भी यथाशीघ्र हो जायेगी।''

''तो सुनो। मैं तुम्हें एक बड़ा उपाय सुझाती हूँ। पर मैं यह कहूँ, इससे पहले तुम्हें वचन देना होगा कि मुझसे ही तुम्हारी शादी होगी। किसी और से शादी नहीं करोगे।'' शान्ता ने कहा।

नरेंद्र ने बिना कुछ सोचे-विचारे तुरंत कह दिया, ''तुमने भी कैसे सोच लिया कि किसी और से शादी करूँगा। मैं अभी इसी समय तुम्हें वचन देता हूँ और तुम्हारी क़सम खाता हूँ।''

''क़समों की कोई ज़रूरत नहीं। बस, एक

काम करो। गाँव भर में प्रचार कर दो कि तुम मुझसे प्रेम करते हो और किसी भी हालत में किसी और लड़की से शादी करने का सवाल ही नहीं उठता।'' शांता ने कहा।

इस पर नरेंद्र चिढ़ता हुआ बोला, ''तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है, इसीलिए ऐसे बहाने बना रही हो।''

उसके इस जवाब पर दुखी होती हुई शांता बोली, ''ऐसा क्यों कहते हो तुम? मेरा पूरा उपाय गाँव में तुमसे किये जानेवाले इस प्रचार पर ही निर्भर है। मेरी बात मानो, मेरा विश्वास करो, एक महीने तक यह प्रचार जारी रखो। अगले महीने हमारे देश की राजकुमारी पास ही के जंगल में वनविहार करने आनेवाली है। उस समय उसके साथ रहते हुए कोई साहस भरा काम कर दिखाना, जिससे वह तुम पर प्रसन्न हो। तब वह तुमसे कुछ माँगने के लिए कहेगी।'' कहते-कहते शांता रुक गयी।

नरेंद्र की आतुरता बढ़ गयी। उसने पूरा विवरण बताने पर ज़ोर दिया। शांता ने अपनी योजना बताते हुए कहा, ''राजकुमारी तुमसे शादी करने का प्रस्ताव रखेगी। तुम्हें ऐसा करने से साफ़-साफ़ इनकार करना होगा। लोग यह जानकर तुम्हारी प्रशंसा करेंगे और कहेंगे कि नरेंद्र शांति को अपनी जान से भी ज़्यादा चाहता है और इसीलिए उसने राजकुमारी के विवाह के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। इससे तुम बड़ा नाम कमाओगे।''

शांता ने सब कुछ बताने के बाद कहा, ''इस

संसार में त्याग से बढ़कर कोई महान कार्य नहीं है। अतः मेरे उपाय को अमल में ले आओ।''

''मैं नहीं समझता कि इतनी छोटी-सी बात पर मेरा नाम होगा, मैं प्रसिद्ध हो जाऊँगा। फिर भी तुम्हारा उपाय अद्भुत है। जैसा तुमने कहा, वैसा ही करूँगा।'' नरेंद्र ने लंबी सांस खींचते हुए कहा।

दूसरे ही दिन गाँव के लोगों को मालूम हो गया कि नरेंद्र शांता को अपनी जान से भी ज़्यादा चाहता है और किसी और लड़की की तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं देखेगा।

शांता नरेंद्र से एक दिन मिली और बोली, ''राजकुमारी कल ही हमारे समीप के जंगल में आनेवाली है। अपना चातुर्य दिखाना और हमारे उपाय को अमल में लाना। अच्छा यही होगा कि

अपने पास एक तलवार भी रख लो।''

शांता का चाचा राजा के दरबार में काम करता था। उसके ज़रिये राज परिवार से संबंधित रहस्य शांता के परिवार को मालूम होते रहते थे। नरेंद्र भी यह बात जानता था। इसलिए कोई संदेह प्रकट किये बिना दूसरे दिन वह जंगल चला गया।

थोड़ी दूर जाने के बाद उसे एक स्त्री का आर्तनाद सुनायी पड़ा, ''रक्षा करो, रक्षा करो।'' वह दौड़ता हुआ वहाँ गया। घनी मूँछवाला एक संदुर युवती को तलवार दिखाते हुए धमका रहा था। नरेंद्र ने तुरंत म्यान से तलवार निकाली और उसपर टूट पड़ा। दोनों में थोड़ी देर तक लड़ाई हुई और आखिर वह मूँछवाला नरेंद्र की बहादुरी के सामने टिक नहीं पाया। वह वहाँ से भाग निकला।

''महावीर, ऐन वक़्त पर आकर तुमने मुझे बचा लिया। मैं इस देश की राजकुमारी हूँ। मेरा नाम शशिरेखा है।'' यों युवती ने अपना परिचय स्वयं दिया और सविस्तार बताया कि जंगल में वह क्यों आयी।

अपनी पूरी कहानी सुनाने के बाद राजकुमारी ने नरेंद्र से कहा, ''महावीर, वह घनी मूँछवाला हमारी सेना में बहुत बड़ा खड्गवीर है। तुमने मेरी रक्षा करने के लिए इतने बड़े खड्गवीर का सामना किया। उसका दुम दबाकर भाग जाना इस बात का सबूत है कि खड्ग युद्ध में तुम उससे भी महान हो। तुम सुंदर हो, साहसी हो, पराक्रमी हो। कल मैं तुम्हारे घर रथ भेजूँगी। मुझसे विवाह कर लो, इस देश का राजा बनो और अपने देश को बचा लो।'' राजकुमारी ने कहा।

नरेंद्र निस्तेज रह गया। देखने में शशिरेखा सुंदर तो है ही, उसपर वह इस देश की राजकुमारी भी है। उसने सोचा, यह मेरा भाग्य नहीं तो और क्या है।

नरेंद्र ने उससे शांता और उससे अपने प्रेम के बारे में कुछ भी नहीं बताया। वह इस बात पर अति प्रसन्न था कि महान बनने का उसका सपना पूरा होने जा रहा है। वह इस देश का राजा भी बन सकता है। बहुत ही खुश होते हुए उसने राजकुमारी से बताया, ''तुम्हारे शब्द मेरे लिए शिला लेख हैं। वैसा ही होगा, जैसा तुम चाहती हो।''

फिर नरेंद्र घर लौटा। वह रात को सपने देखने लगा। उसने सपने में देखा कि वह राजा बनकर

सिंहासन पर बिराजमान है और लोग उसे प्रणाम कर रहे हैं।

दूसरे दिन नरेंद्र के घर के सामने एक रथ आकर रुका। उसमें से वह घनी मूँछवाला और शशिरेखा उतरे और सीधे घर के अंदर आये। नरेंद्र का बाप उन्हें देखकर आश्चर्य में डूबा जा रहा था तो घनी मूँछवाले ने कहा, ''हम तुम्हारे बेटे से विवाह की बात करने आये हैं।''

नरेंद्र के पिता ने सकपकाते हुए कहा, ''महाशय, क्या मैं जान सकता हूँ, आप लोग कौन हैं?''

''मैं शांता का चाचा हूँ, जिसे तुम्हारा बेटा अपनी जान से भी ज़्यादा चाहता है। राजा के दरबार में काम करता हूँ। इस गाँव में पहली बार आया हूँ। इस कन्या का नाम शशिरेखा है। यह मेरी पुत्री है। शांति के कहने पर इसने तुम्हारे बेटे की परीक्षा ली। तुम्हारा बेटा, इस परीक्षा वह अपना वादा भूल गया। उसका मन डगमगा गया। फिर भी शांता इसी से शादी करने की ज़िद कर रही है। हम उसका विवाह पक्का करने आये हैं। शांता के माँ-बाप भी थोडी ही देर में यहाँ पहुँचनेवाले हैं।''

पिता के बगल में ही खडा नरेंद्र यह सब सुन रहा था। शर्म के मारे उसका सिर झुक गया। उसी दिन शांता के साथ उसका विवाह निश्चित हो गया।

नरेंद्र शांता से एकान्त में मिला और बोला, ''शांता, तुम्हारे उपाय के सहारे महान बनना चाहता था। पर ऐसा नहीं हुआ। लेकिन मुझसे विवाह रचाकर अपना इरादा पूरा करने में तुम कामयाब हो गयी हो।''

शांता ने मुस्कुराकर कहा, ''बहुत से लोगों का समझना है कि महानता धन, प्रेम, शक्ति, ओहदे आदि में है और उन्हीं से प्राप्त होती है। पर महानता तो त्याग में है। मैं चाहती थी कि तुम्हें मालूम हो कि त्याग कितना कष्टकर होता है। यही बताने के लिए मैंने यह नाटक किया। भविष्य में कभी भी महान बनने के सपने मत देखना। आराम से हम अपना दांपत्य जीवन बितायेंगे।''

होनेवाली पत्नी के विवेक पर नरेंद्र बहुत संतुष्ट हुआ और महान बनने का विचार उसने छोड़ दिया।

आरुद्र वर्षा

माणिक्यवर्मा वेंगि देश के राजा थे। उनके दरबार में कीर्तिसेना राजनर्तकी थी। वह विलक्षण सुंदरी थी। उसके सौंदर्य के अनुरूप उसके केश भी अति मनोहर थे। राज्य भर में कहा जाता था कि केश हों तो ऐसे हों।

पता नहीं कि उसके शरीर में क्या परिवर्तन आया, उसके सुंदर केश झड़ने लगे। इससे वह भय-कंपित हो गयी। उसने राजवैद्य से परीक्षा करवायी। राजवैद्य ने उसकी चिकित्सा की, पर कोई लाभ नहीं हुआ। उसके केश झड़ते ही गये।

तब राजवैद्य ने कहा, ''पुत्री कीर्तिसेना, जब रोग की चिकित्सा नहीं हो पाती तब हम भी भगवान का ही आश्रय लेते हैं। उस स्थिति में एकमात्र भगवान ही उसे स्वस्थ कर सकते हैं। हमारे ही राज्य के सुरपुर नामक गाँव में शिव का एक मंदिर है। उस शिवालय के शिव लिंग पर केशों से भरी कवरी है। इसी कारण सभी उसे कवरी लिंगेश्वर के नाम से पुकारते हैं और उसकी पूजा करते हैं। उस कवरी लिंगेश्वर की पूजा करो तो शायद तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हो जाये।''

राजवैद्य की सलाह पर राजनर्तकी ने उस शिवलिंग की प्रार्थना करते हुए कहा, ''सुरपुर में स्थित ऐ कवरी लिंगेश्वर, तुमने मेरे केशों को झड़ने से बचा लिया तो मैं तुम्हारे मंदिर आऊँगी और तुम्हारे मंडप में नृत्य करूँगी।'' यों उसने मनौती रखी।

राजवैद्य की चिकित्सा का परिणाम था अथवा कवरी लिंगेश्वर स्वामी की कृपा, राजनर्तकी की बीमारी दूर हो गयी और अब उसके केश पहले की ही तरह सुंदर दिखने लगे। केशों का गिर जाना बंद हो गया।

कीर्तिसेना ने अपनी मनौती पूरी करनी चाही। इसके लिए महाराज से उसने अनुमति माँगी।

राजा ने उससे पूरा विषय जानने के बाद कहा, ''अद्भुत! ऐसे भक्तवत्सल कवरी लिंगेश्वर का दर्शन अवश्य करना चाहिए।'' फिर उन्होंने मंत्री से कहा, ''कीर्तिसेना की नाट्य प्रदर्शनी के प्रबंध के साथ-

- तपस्वी -

साथ हमारी यात्रा की भी आवश्यक व्यवस्था कीजिए।''

अब सुरपुर का नक्शा ही बदल गया। मंदिर बहुत ही अच्छी तरह से सजाया गया। मंडप में राजनर्तकी के नृत्य के लिए आवश्यक प्रबंध तेज़ी से किये गये। उस दिन माणिक्य वर्मा ने मंदिर में विशिष्ट पूजाएँ कीं। इस कारण सामान्य जनता को भगवान के दर्शन में रुकावटों का सामना करना पड़ा।

दूर प्रदेश से आयी सुंदरी नाम की एक स्त्री इस पर चिल्लाती हुई कहने लगी, ''क्या महाराज आकाश से टपक पड़े? वे महाराज हुए तो क्या हुआ? कबरी लिंगेश्वर स्वामी के सामने उनकी क्या गिनती? महाराज का आदर हम ज़रूर करते हैं, पर वे हमारे लिए इतने मुख्य नहीं जितने लिंगेश्वर स्वामी हैं। लिंगेश्वर की कबरी से छूटे गंगाजल से मैं हर साल भीगती हूँ और मर्द बनती हूँ। हमारे बूढ़े बैल में भी यौवन फूट पड़ता है। वे दिन फिर आनेवाले हैं। हमारे बैलों में फिर से यौवन भरेगा। मुझे मर्द बनना है। इस राज्य की जनता को हमें खाना खिलाना है। स्वामी, मंदिर में प्रवेश होने दीजिए।''

महाराज ने सुंदरी की चिल्लाहट का सारांश सुना और उसे मंदिर के अंदर आने के लिए बुलवाया। उसके साथ उसका पति भी आया। उन्होंने अपने साथ लायी थैलियों में से कपास का ढेर नीचे उँड़ेला और ''हरहर महादेव'' कहकर लिंगेश्वर स्वामी को प्रणाम करने लगे। फिर कपास जलायी और ग़र्भगृह के शिव को साष्टांग नमस्कार किया। महाराज ने इशारा करके अपने सैनिकों को बताया कि वे उन्हें ऐसा करने से न रोकें। फिर माणिक्य वर्मा की पूजा के

साथ-साथ उस दंपति की पूजा भी पुजारी ने एकसाथ स्वीकार की।

पूजा की समाप्ति के बाद महाराज ने सुंदरी और उसके पति को अपने पास बुलवाया और उनसे पूछा, ''महाराज होने के नाते परंपरा से चली आती हुई पूजा-पद्धति को मैं तोड़ना नहीं चाहता था। मुझे यह सब पसंद नहीं पर मैं चुप रह गया। उन्मादिनी की तरह तुम चिल्लाती रही कि मर्द हो गया हूँ, बूढ़े बैलों में यौवन फूट आया आदि। गर्भगृह में तुम दोनों ने कपास भी जलायी। यह सब तुमने क्यों किया, इसका ब्योरा अपने महाराज को तुम्हें देना ही पड़ेगा।'' उनकी आवाज़ में कठोरता भरी हुई थी।

तब सुंदरी के पति ने सविनय कहा, ''महाराज, मेरी पत्नी पगली नहीं है। उसके मुँह से निकले शब्द पागलपन से भरे नहीं हैं। हमारी परिपाटी रही है कि अश्विनी से लेकर रेवती तक, सत्ताईस नक्षत्रों

में सूर्य के प्रवेश तक होनेवाले वर्षापात की हम गिनती करते हैं। मुख्यतया मृगशिरा से लेकर विशाख तक बारहों नक्षत्रों के दौरान जो वर्षा होनी चाहिए और जो होनी नहीं चाहिए, उस वर्षापात के आधार पर कृषि के लाभ और हानि का अनुमान लगाया जाता है। इस साल अच्छी वर्षा हुई है। मृगशिरा में जो वर्षा हुई, उससे बूढ़े बैलों ने भी चुस्ती के साथ हल खींचा। रुद्र की जटा से उमंगों से भरी बहती गंगा की तरह, आरुद्र नक्षत्र में हुई वर्षा में भीगती हुई मेरी पत्नी ने भी पुरुष की तरह खेत में काम किया। मेरी पत्नी ने जो बातें कीं, वे आरुद्र की वर्षा तथा मृगशिरा से संबंधित हैं। मेरी पत्नी ने आपके सम्मुख उन्मादिनी की तरह व्यवहार किया, इसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।''

महाराज माणिक्य वर्मा उसकी बातों से शांत हो गये और कहा, ''यह तो ठीक है, पर गर्भगृह में कपास जलाने का क्या मतलब है?''

''महाराज, पुष्य मास के प्रदीपकाल में हल की नोक को बीस तोले की ऊँचाई की कपास से लपेटते हैं और खेत में रखते हैं। तड़के ही आकर उस कपास को निचोड़ते हैं। अगर उससे पानी की बूंदों का प्रवाह बहे तो इसका यह अर्थ होता है कि उस वर्ष अच्छी वर्षा होगी। पानी की बूँदे कम मात्रा में गिरें तो इसका यह मतलब हुआ कि उस साल कम बारिश होगी। इस परीक्षा के बाद कि इस साल अच्छी वर्षा होगी या नहीं, हम शिव के सम्मुख आरती जलाते हैं। और हमने अभी-अभी यही किया।'' सुंदरी के पति ने कहा।

राजा उसके उत्तर से बहुत संतुष्ट हुए और कहा, ''आरुद्र की वर्षा के बारे में मैं ज़्यादा नहीं जानता, पर रुद्र के इस मंदिर में तुम्हारी पत्नी सुंदरी ने एक मर्द की तरह महाराज की ग़लती निकाली। आरुद्र वर्षा में भीगकर स्त्री भी पुरुष की तरह परिश्रम करे, सदा ही ऐसी वर्षा हो और हमारा राज्य फले-फूले, समृद्ध बने।''

राजनर्तकी कीर्तिसेना के नृत्य की समाप्ति के बाद महाराज ने सुंदरी व उसके पति का सत्कार किया। उस काल के वेंगी राज्य में आरुद्र वर्षा होने पर कम से कम एक दिन ही सही, स्त्रियाँ खेतों में काम अवश्य करती थीं।

इतिहासकार

एक समय महेन्द्रगिरि पर राजा पुरंदर शासन करता था। वह न केवल राजतंत्र में निपुण था, बल्कि कलाकारों के प्रति भी बड़ा आदर भाव रखता था और उनका सम्मान करता था। इसलिए वह मौक़ा मिलते ही विविध प्रकार की कलाओं के मर्मज्ञ विद्वानों को पुरस्कृत किया करता था।

एक दिन राजा पुरंदर के दरबार में एक विदेशी आया। उसका नाम श्रीकंठ था। इतिहास लिखना उसका पेशा था। उसने अनेक देशों में एक-एक वर्ष बिताकर वहाँ की भाषाएँ सीखीं और उन देशों के इतिहास पूर्ण रूप से लिखकर प्रस्तुत किये। इस तरह श्रीकंठ ने चौदह भाषाओं में पांडित्य प्राप्त किया और चौदह देशों के इतिहास लिखे। इसके बाद वह महेन्द्रगिरि आया।

ऐसे विद्वान को अपने देश में आया देख राजा पुरंदर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने श्रीकंठ से कहा- ''आप मेरे नगर में भी एक वर्ष तक रहकर हमारे देश का इतिहास लिखिए। आपके लिए आवश्यक सारी सुविधाओं का मैं प्रबंध कर दूँगा।''

''अच्छी बात है, महाराज! लेकिन मुझे आप अपना अंतरंग सखा बनाकर अपने ही साथ रहने दीजिए। इससे मेरा काम बड़ा सरल हो जाएगा।'' श्रीकंठ ने जवाब दिया।

पुरंदर ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया। श्रीकंठ राजा के अंतरंग सखा का पद प्राप्त कर अपना अधिकाधिक समय राजा के साथ टहलने, शिकार खेलने व युद्धों में भी जाकर बिताया करता था। इस तरह उसने अपने राजा के शासन-विधान का सूक्ष्म रूप से परिशीलन किया। उसके पश्चात नगर में घूमते सब तरह के लोगों के साथ चर्चा करते हुए अपना समय बिताने लगा। नगर के सभी लोगों को शीघ्र मालूम हो गया कि श्रीकंठ राजा का अंतरंग सखा है। इसलिए सब लोग उसके प्रति विशेष आदर दिखाने लगे। नगर के धनी

- इंद्रनाथ केनेडिया -

हैं। मगर इस नगर के व्यापारी और धनी अन्यायपूर्वक धनार्जन करके भ्रष्टाचार का जीवन बिता रहे हैं।''

राजा को ये अंतिम शब्द पसंद नहीं आये। उन्होंने श्रीकंठ को बुलाकर कहा-''महापंडित, आपका ग्रन्थ अच्छा बन पड़ा है। इसमें त्रुटियाँ निकालने की जगह नहीं है। लेकिन मेरे नगर के व्यापारियों तथा धनिकों को स्वार्थी और भ्रष्ट चित्रित किया है जो बिलकुल असत्य है।''

''मेरे लेखन में अगर कोई त्रुटियाँ हों तो क्षमा कीजिए। इस ग्रन्थ को पूरा करने के पहले मैं उन त्रुटियों को सुधार कर जाऊँगा।'' श्रीकंठ ने कहा।

ये बातें सुन राजा बहुत प्रसन्न हुआ। दूसरे दिन श्रीकंठ नगर के बड़े-बड़े धनिकों तथा व्यापारियों से मिलने गया और बोला-''राजा चक्रवर्ती के पास भेंट भेजना चाहते हैं। इसलिए आपके पास जो उत्तम क़िस्म के हीरे हैं, उनकी सूची बनाकर दे दीजिए।'' इसी प्रकार श्रीकंठ ने कुछ लोगों से सोना भी ले लिया। श्रीकंठ राजा के अंतरंग सखा थे, इसलिए सबने लाखों रुपयों की क़ीमती चीज़ें निःसंकोच दे दीं। श्रीकंठ ने वस्तुओं की जो सूची तैयार की, उस पर व्यापारियों के हस्ताक्षर भी लिये।

दूसरे दिन सबेरे नगर में यह अफ़वाह फैल गयी कि पिछली रात को श्रीकंठ नगर से भाग गया है। इस पर वे सब राजा के पास आ पहुँचे। जिन लोगों ने पिछले दिन श्रीकंठ के हाथ हीरे व सोना दिये थे, वे अपनी सूचियाँ ले जाकर राजा से बोले-

और व्यापारी भी उसे निमंत्रण देकर विशिष्ट भोज के लिए बुलाने लगे। उनका विचार था कि श्रीकंठ के द्वारा वे लोग लाभ उठा सकते हैं।

श्रीकंठ के महेन्द्रगिरि में आये एक वर्ष पूरा होने को था। महेन्द्रगिरि के इतिहास का लेखन भी समाप्त होने को था। एक दिन राजा ने उस अपूर्ण ग्रन्थ को मंगवा कर पढ़ा। उस में महेन्द्रगिरि के आचार-व्यवहार, जनता की भलाई के लिए राजा के द्वारा किये जानेवाले कार्य, राजा तथा दरबारियों के बीच का परस्पर विश्वास, एवं सहयोग इत्यादि बातें सुंदर ढंग से वर्णित हुई थीं।

लेकिन एक स्थान पर लिखा था-''इस नगर की जनता भोली है। राजा तो धर्मात्मा हैं। राज कर्मचारी राजा के प्रति अनुपम राजभक्ति रखते

''महाराज, हमारी रक्षा कीजिए। आपके अंतरंग सखा ने आपका नाम लेकर हम सबको लूट लिया है। आप तो धर्मात्मा हैं। हमें जो नुक़सान हुआ है, उसे भर दीजिए।''

राजा ने सोचा कि उन्होंने तो श्रीकंठ को यह आदेश नहीं दिया था कि धनिकों व व्यापारियों से हीरे व सोना वसूल करे। श्रीकंठ अपने आप ही सबको लूटकर भाग गया होगा। यह सोचकर उन्होंने खजांची को बुला भेजा और आदेश दिया कि किस किसको कितना देना है, वह इसकी सूची बनाये।

खजांची ने सबकी सूचियाँ लेकर हिसाब किया तो कुल जितनी रक़म हुई उतनी ख़जाने में न थी। यह बात सुनकर राजा भी चिंता में डूब गया।

इतने में श्रीकंठ एक भारी थैली के साथ वहाँ आ पहुँचा और उसे राजा के सम्मुख रखकर और एक सूची उनके हाथ में देकर बोला-''महाराज, मैंने जिस-जिस से जो चीज़ें ली हैं, उनकी सूचियाँ भी बनायी हैं। आप कृपया सूची के मुताबिक़ उनकी चीज़ें उन्हें वापस कर दीजिए।''

श्रीकंठ को देखते ही फरियादी सब घबरा गये। राजा के मुँह से बात निकलने के पहले ही वे राजा के चरणों पर गिरकर बोले-''महाराज, हमने आपको जो सूचियाँ दी हैं, वे सही न हों तो कृपया हमें क्षमा कर दीजिए। हमने जब सुना कि श्रीकंठ भाग गये हैं, तब लोभ में आकर हमने झूठी सूचियाँ तैयार कर लीं।''

राजा ने उनकी चीज़ें उन्हें लौटाने से साफ़ इनकार कर दिया और उन्हें खाली हाथ वापस भेज दिया। श्रीकंठ के हाथ से राजा ने थैली ले ली और उसे खजांची के हाथ में देकर खज़ाने में जमा करने का आदेश दिया।

इसके बाद राजा ने श्रीकंठ से कहा-''महापंडित, आपके ग्रन्थ में झूठी बातें नहीं हैं, इसे साबित करने के लिए आपको काफी श्रम उठाना पड़ा है।''

''बड़े लोगों के बारे में सच्ची बातें लिखने के लिए ऐसी मुसीबतें उठानी पड़ती हैं महाराज; यह भी एक कला है।'' श्रीकंठ ने उत्तर दिया।

इसके बाद श्रीकंठ राजा पुरंदर से पुरस्कार प्राप्त कर दूसरे देश में चला गया।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

नवम्बर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

सुमित श्रीवास्तव
इन्द्रपुरी, रोड न. १३
रातू रोड, पो. हेहल, राँची - ८३४ ००५
झारखंड.

"एक बचपन गुड़िया के संग खेले।
दूसरा चुपचाप तनहाइयाँ झेले ॥"

चंदामामा वार्षिक शुल्क
भारत में १२०/- रुपये डाक द्वारा
Payment in favour of CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

CHANDAMAMA (Hindi) JANUARY 2002 Regd. with RNI. No. 1087/57
Registered No. TN/Chief PMG-866/2001